IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आध्यात्मिक रसायन विज्ञान 02

द्वारा

डा. सुरेन्द्र कुमार सोनी

एम.एस.सी. एन्टामालाजी एवं आयुर्वेदरत्न, रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिश्नर

सारांश (Abstract):

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत्।"

इच्छानुसार संतान का भावार्थ है, देवात्माओं का अवतरण, ऐसी संतान जिससे व्यक्ति सुखी हो, परिवार सुखी हो, ग्राम सुखी हो, देश सुखी हो और समस्त संसार सुखी हो। भारत ऋषि प्रधान देश रहा है। तप-तपस्या को प्रधानता दी जाती रही है। स्वयं कष्ट वरण किये लेकिन सब के सुख की कामना की गई। कालान्तर में भारत को गुलामी का दंश सहना पड़ा है और विशेषरूपसे हिन्दुओं को, परंतु अब दुःख के बादल छट रहे हैं। युग बदल रहा है। रामराज्य के सूर्योदय की लालिमा झलकने लगी है। हमें अपनी सनातन संस्कृति पर गर्व है। द्वापर, त्रेतायुग के काल खण्ड में भारतीय ऋषियों के द्वारा देवात्माओं को गढ़ने के वैज्ञानिक अनुसंधान किये गए थे तथा आध्यात्मिक मंत्र विद्या भी थी जिसकी एक झलक इस शोध पत्र में आप देखेंगे। लेकिन वर्तमान समय में भी देवात्माओं का अवतरण हो रहा है। अब राष्ट्र के नागरिकों की जिम्मेदारी है कि, देवात्माओं के अवतरण हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करने की तैयारी करें। यह अनुसंधान इस दिशा में नीव का पत्थर सिद्ध हो ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

शीर्ष शब्द (Key words) :-

सुख के आकर्षण का नाम संसार है।

संतान का महत्व सार्वभौमिक है।

संतान के बिना संसार अधूरा है।

सिद्धान्त सफल शोध का आधार है।

सिद्धान्त के बिना शोध अधूरी है।

प्रकृति, सांसारिक क्रिया-कलापों की, नियंत्रक है।

"आकर्षण और आभार मिथुन हैं अर्थात् जहाँ आकर्षण है वहाँ आभार है और जहाँ आभार है वहाँ आकर्षण है।"

आभार : सर्व प्रथम आभार है भारत के ऋषि-मुनियों का। ऋषि-मुनियोंके अथक प्रयास के फलस्वरूप भारत को विश्वगुरू का सम्मान प्राप्त हुआ था। वर्तमान समय में सनातन संस्कृति की विरासत का पुनः जीर्णोद्धार का उपक्रम चल पड़ा है। विश्वास है कि भारत पुनः विश्वगुरू का संमान प्राप्त करेगा। इसलिए इस प्रयास में संलग्न सभी मूर्धन्य विद्वानों का आभार है।

भारत के हृदय में स्थित मध्य प्रदेश का भी आभार है। इस प्रदेश की मिट्टी में, चंद्रशेखर जैसे अनेक वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, इस मिट्टी में खेले-पढ़े और बढ़े हैं। इसी प्रकार संगीत की दुनियाँ में धूम मचानेवाली स्वर कोकिला का सम्मान पानेवाली स्वर्गीय लतामंगेशकर का जन्म मध्य पदेश में ही हुआ। ऐसे अनेक मूर्धन्यों का आभार जिनके कारण देश का सम्मान बढ़ा है।

मध्य प्रदेश की यह भूमि, वीरों की जन्म भूमि है जहाँ राजा छत्रसाल की राजधानी थी। जिला छतरपुर राजा क्षत्रसाल के नाम पर ही वसाया गया। राजा क्षत्रसाल के कवच, तलवार इत्यादि युद्ध के समय प्रयोग किए जाने वाले अस्त्र.शस्त्र आज भी धुबेला म्यूजियम में सुरक्षित हैं। उनकी तलवार भी इतनी भारी है कि आज के युवकों के द्वारा उसे उठाना कठिन प्रतीत होता है। राजा क्षत्रसाल की वीरता अनुपम थी। उनके वारे में कवि ने

लिखा है-इसकी संक्षिप्त लाईने इस प्रकार हैं-"राजन् में राजा क्षत्रसाल और सब रजईयाँ।" इसके अलावा लिखा है-"क्षत्ता तेरे राज में धक-धक धरती होय। उनकी वीरता का उल्लेख, " परम् पूज्य गुरूदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित प्रज्ञा पुराण में भी मिलता है।

राजा क्षत्रसाल के अलावा आल्हा-ऊदल जैसे महावीरों को अपने कर्तव्य दिखाने का अवसर भी इसी भूमि में मिला और सम्मान प्राप्त किया। चंदेल वंश की प्रथम राजधानी इसी भूमि खजुराहो पर थी। इसके बाद उनकी राजधानी महोबा में स्थापित हुई। आल्हा, ऊदल की वीरता का लोहा पृथ्वीराज चौहान को भी मानना पड़ा। एक समय की बात है कि पृथ्वीराज चौहान ने एक लाख सैनिकों से महोबा शहर को घेर लिया था। उन्होंने खजुवागढ़ की बैठक की मांग की थी। उल्लेखनीय है कि, वह गढ़ी राजनगर में ही स्थित है। लेकिन आल्हा और ऊदल की वीरता का लोहा पृथ्वीराज चौहान की एक लाख सेना को मानना पड़ा।

इस गढ़ी में कुछ समय पूर्व प्राईमरी सरकारी स्कूल चलता रहा है। इस स्कूल में पढ़ने का सौभाग्य इस लेखक को भी मिला है। कहा जाता है कि, इस गढ़ी से एक सुरंग महोबा तक जाती है। बचपन में कथित इस सुरंग के एक भाग तक मैं भी अपने सहपाठियों के साथ गया था। उसमें काफी अंधेरा होने के कारण आगे नहीं जा सका। वर्तमान समय में उसके गेट पर ताला लगा दिया गया है। अब यह गढ़ी पुरातत्त्व विभाग के संरक्षण में है।

चंदेलवंश के राजाओं के द्वारा विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के मंदिरों का निर्माण कराया गया, जो अपने आँचल में सनातन संस्कृति की विरासत को संजोये हुए है। मंदिरों में उकेरी गई मूर्तियों में अनेक वैज्ञानिक रहस्य छिपे हुए है। इसलिए इस वीरभूमि को प्रणाम तथा चंदेलवंश के राजाओं का भी आभार जिनके कृत्यों से भारत की वीरता का सम्मान और कलाकृतियों के कारण विश्व में सम्मान बढ़ा है। उल्लेखनीय है कि, खजुराहो के मंदिर विश्व प्रसिद्ध हैं तथा यूनेस्को, विश्व मोनूमेन्ट्स धरोहर, की सूची में सन्निहित है। इसलिए चंदेलवंश के राजाओं का आभार है।

आभार परम् पूज्य पिता स्व. शिवराम सोनी, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया जिसके कारण उन्हें भारत शासन से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का सम्मान प्राप्त हुआ, और वंदनीया माता स्व. रामकुँवर सोनी जिनकी कृपा से भारतीय सनातन सुसंस्कार मिले। माता.पिता का आभार ही नहीं वल्कि सदैव ऋणी हूँ। इसके साथ ही राजनगर दिव्य, पुण्य और पवित्र मातृभूमि का भी आभार है जहाँ इस मूढ़ सेवक को जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

लेखकीय:-

"आशा की किरण"

लोगों से मिलो अपने दिल की बात कहो और उनके दिल का हाल सुनो तो चारों ओर दर्द ही दर्द दिखाई देता है, संतान के होने और न होने का दर्द हृदय को विदीर्ण कर देता है। किसी के लड़की है या लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं तो उसे लड़का न होने का दर्द सता रहा है। दूसरी ओर किसी के लड़का है तो लड़की न होने का दर्द सताए जा रहा है तथा किसी दंपत्ति के संतान न होने का दर्द सताए जा रहा है। किसी के लड़का और लड़की दोनों हैं तो लड़का बुरी संगत में पड़ गया है, माता-पिता दोनों दु:खी हैं। कुल मिलाकर सभी ओर दर्द ही दर्द दिखाई दे रहा है। सभी अपना-अपना दर्द सुनाकर दिल हल्का कर ले रहे हैं। यह सब देख-सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो गया।

मैं सोचता हूँ कि, इसका हल क्या हो सकता है ? कोई समस्या होती है तो उसका समाधान भी होता है। आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ता हूँ तो उसमें एक से बढ़कर एक समाधान दिखाई देते हैं। लेकिन वे सभी समाधान काल्पनिक ही दिखाई देते हैं, क्योंकि आज ऋषि परंपरा का तो लोप हुआ ही नजर आता है। गुलामी के कालखण्ड में आततार्इयों ने सनातन संस्कृति को निर्मूल करने के सड़यन्त रचे, सनातन साहित्य जिसका विशाल भण्डार नालंदा विश्वविद्यालय में था, उसको अग्नि की भेंट कर दिया। इतना ही नही वल्कि देश को आजादी मिलने के बाद भी शिक्षा पद्यति से सनातन संस्कृति को दूर रखा गया। लेकिन हमारे ऋषियों ने उसे जन-जन के डी.एन.ए. में संजोकर रखने की व्यवस्था बनाई थी, इसलिए वह आज भी किसी न किसी रूपमें विद्यमान है।

संतान को जन्म देनवाले अनेक योगी जन आज भी विद्यमान हैं और बिना किसी लोभ-लालच के समाज के कष्टों को दूर कर रहे हैं। यह विद्या उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली है। यहाँ उनके नामों का उल्लेख करना उचित नहीं है परन्तु उनकी प्रमाणिकता पर कोई संदेह नहीं है। उनके लिए देशी कहावत फिट बैठती है कि, 'साँच को आँच नहीं।' लेकिन फिर भी वैज्ञानिक दृष्टि से परखना यथोचित है। इसकी चर्चा यथास्थान अवश्य करेंगे।

इच्छानुसार संतान की पहेली को सुलझानेे के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक परीक्षण हेतु पदार्थ (तत्त्व elements) के लिंकेज विषय पर अध्ययन किया। इसके साथ-साथ प्राणियों की प्रक्रिया पर अध्ययन किया तो निष्कर्ष सामने आया कि दोनों की प्रक्रिया में साम्य है। इसके बाद वैज्ञानिकों द्वारा क्लोरीन को क्रियाशील ऋण आयन की संज्ञा देने की जानकारी मिली। क्लोरीन के अन्तिम आरबिट में सात इलैक्ट्रान होते हैं इसलिए यह अन्य तत्त्व से एक इलैक्ट्रान शीध्रता से ग्रहण कर लेता है। इसलिए इसे ऋण आयन कहा जाता है। तथा यह अर्गान और नियांन की तरह स्थाई बन जता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने विशिष्ट प्रक्रिया अपनाकर क्लोरीन के दो परमाणुओं को मिलाकर क्लोरीन गैस बनाने में सफलता पाई। जिसका सूत्र (Cl_2) है। तत्त्व और मनुष्य की निशेचन क्रिया में साम्य है इसलिए जिन दंपत्तियों को लड़कों की चाह है, इस प्रयोग से उनके जीवन में 'आशा की किरण' दिखाई दी। इस संबन्ध में विशष विवरण आप आगे पढ़ेंगे।

संतान पुत्र अथवा पुत्री प्राप्त कर लें लेकिन सबसे बड़ी आवश्यकता है, सुसंस्कारित संतान की। इस प्रश्न का समाधान प्राप्त करना सर्वाधिक आवश्यक है। इस समस्या को हल करने के लिए अनेक ग्रंथों जैसे कि रामचरितमानस, श्रीमद्भगवदगीता, वेद, पुराण इत्यादि तथा "वेदों का दिव्य संदेश" (रचैता *वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य*) इत्यादि ग्रंथों को पढ़कर समाधान ढूढऋने का प्रयास किया। इसे आप आगे विस्तार से पढ़ेंगे।

संक्षिप्त में कहें तो प्रस्तुत शोध का लक्ष्य मूर्धन्य आत्माओं का अवतरण हो, जन-जन का जीवन सुखमय हो, देश सुखी हो और संसार सुखी हो।

भवदीय

डा. सुरेन्द्र कुमार सोनी

विषय सूची (Table of contents)

क्रमांक	विषय सूची	विषय	पेज क्रमांक	
			कहाँ से	कहाँ तक
1	2	3	4	5
1	शोध का शीर्षक	आध्यात्मिक रसायन विज्ञान.02	1	1
	शोध का उपशीर्षक	*इच्छानुसार संतान*	1	1
2	सारांश (Abstract)		1	1
3	शीर्ष शब्द (Key words)		1	1
4	आभार		1	2
5	लेखकीय	एवं विषय सूची (Table of contents)	2	3-4
6	प्रस्तावना	माहात्म्य	4	5
7	भूमिका		5	5
8	अध्याय क्रमांक 1	1. शीर्षक का अध्ययन 1.1 कठिनाईयों का ब्यान 1.2 अध्ययन का उद्देश्य	5	6
9	अध्याय क्रमांक 2 संकल्पना के अनुसार रूपरेखा conceptual framework	2.1-शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology of problem) • आध्यात्मिक दृष्टिकोंण • प्राकृतिक सिद्धान्तः 2.2-समाज शास्त्र की समस्या (Sociology of problem) : 2.3-दिये हुए विषय या आँकड़ों का संग्रह (Collection of Data): 2.4-आँकड़ों का विश्लेषण (Analysis of Data):	6	9
10	अध्याय क्रमांक 3	व्यवस्था विज्ञान (शोध का तरीका) (Chapter 3. Methodology) विषयों का चयन (Selection of Subject)	10	17
11	अध्याय क्रमांक 4	तर्क-वितर्क/विवेचन का निष्कर्ष (Findings of Discussions) खोज का वर्णन Description of Findings	17	28
	तालिका क्रमांक 01	आत्मा	17	18
	तालिका क्रमांक 02	पदार्थ और प्राणियों की प्रक्रियाओं में साम्य।	18	19
	तालिका क्रमांक 03	आकर्षण का सिद्धान्त समानरूपसे प्रभावी है।	19	20
	तालिका क्रमांक 04	भौतिक तत्त्व और आत्म तत्त्व में साम्य है।	20	21
	तालिका क्रमांक 05	तत्त्वों के एटोमिक लिंकेज एवं मनुष्य निषेचन के परिणामों से तुलना	21	22
	तालिका क्रमांक 06	इच्छानुसार संतान प्राप्त करने के आश्चर्यजनक एतिहासिक प्रयोग	22	24
12	सारांश (SUMMARY):		28	30
13	ग्रंथ की सूची (Bilibiography)	1-4	30	30
14	परिशिष्ट A: प्रश्नावली (Appendix A: Questionnaire):-	प्रश्नोत्तर संख्या 7	30	31
15	परिशिष्ट B: किसकी सम्मति/ स्वीकृति/ अनुमति (Appendix B: Consent from):	स्वयं की अंतरात्मा की आवाज का अनुकरण करके उक्त अनुसंधान प्रस्तुत किया है।	31	31

16	परिशिष्ट C: आँकड़ों से संबन्धित चित्र (Appendix C: Data Figures):	चित्रों की कुल संख्या 14	31	33

प्रस्तावना:-

माहात्म्य: "संतान का महत्व सार्वभौमिक है।" इस संसार में सूक्ष्म से भी सूक्ष्म जीव, जलचर, थलचर तथा आकाश में उड़नेवाले कीट, पतंगे एवं पक्षी इत्यादि सभी के जीवनचर्या का निरीक्षण करें तो देखने में आता है कि सभी संतान से प्रेम करते हैं, उनके जनने के प्रयत्न में निरन्तर क्रियाशील रहते हैं तथा उनके लालन-पालन के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

संसार के समस्त जीवों में मनुष्य सर्व श्रेष्ठ माना जाता है। ईश्वर ने उसे अन्य प्राणियों की तुलना में बुद्धि-विवेक प्रचुरमात्रा में प्रदान किया है। इसलिए मनुष्य संतानोत्पादन के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट मर्यादाओं, रीति-रिवाजों का अनुसरण करता है। जैसे कि संतान की संख्या को नियंत्रित रखना, रहने योग्य अच्छे मकान, अच्छे कपड़े, अच्छे खान-पान, शिक्षा-दीक्षा, इत्यादि, इत्यादि सुख-सुविधाओं की व्यवस्था करता है। लेकिन कुछ मामलों में वह पशु-पक्षियों की तुलना में अनियंत्रित भी है। उल्लेखनीय है कि पशु-पक्षी, जलचर जैसे कि मछली इत्यादि वर्ष के निश्चित अवसरों पर ही संतानोत्पादन के लिए क्रियाशील होते हैं लेकिन मनुष्य इसप्रकार की मर्यादाओं का पालन नहीं करता है।

दूसरीओर विचार करें तो मनुष्य पुत्र और पुत्री अर्थात् लड़का और लड़की की संख्या के संतलन हेतु भी जागरूक रहता है। प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा रहती है कि परिवार में पुत्र और पुत्री दोनों हों। सनातन संस्कृति में पुत्री को पूज्य लक्ष्मी देवी का स्वरूप माना जाता है। कालान्तर में कुछ गलत परंपराओं के कारण भेदभाव भी परिलक्षित हुए हैं लेकिन फिर भी धार्मिक कर्मकाण्डों में आज भी कन्या को पूज्य मानते हुए सम्मान दिया जाता है। पुत्री के विवाह के अवसर पर माता-पिता एवं परिवारजनों के द्वारा उचित सम्मान तथा अपनी-अपनी आर्थिक क्षमताओं के अनुसार संपत्ति प्रदान की जाती है।

कहने का तात्पर्य है कि, इस संसार में प्रत्येक परिवार में संतान का महत्व अनुपम है। जिस दंपत्ति के संतान नहीं होती उसे निपुत्री का संबोधन किया जाता है जोकि एक अपमान सूचक है। निपुत्री को हेयदृष्टि से देखा जाता है।

अब उपरोक्त इच्छानुसार संतान शीर्षक की ओर ध्यानाकर्षित किया जा रहा है। संसार के क्रिया-कलाप प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलते हैं। देखने में आता है कि, कुछ दंपत्ति ऐसे होते हैं कि उनके लड़कियाँ ही लड़कियाँ होती हैं। ऐसे परिवार लालायित होते हैं कि उनके एक लड़का हो जाय तो वंश आगे चलेगा, क्योंकि लड़कियाँ तो ससुराल चलींजायगीं। तथा कुछ दंपत्ति ऐसे होते हैं जिनके लड़के ही लड़के होते हैं। ऐसे परिवार लालायित होते हैं कि एक लड़की हो जाती तो परिवार खुशियों से भर जाता। दूसरीओर कुछ परिवार ऐसे होते हैं जिनके न पुत्र होता है और न पुत्री। ऐसे परिवार एक संतान पाने के लिए लालायित रहते हैं।

प्रश्न उठता है कि, ऐसा क्यों होता है ? इस संबध में आगे प्रमाण सहित विस्तार से चर्चा करेंगे। लेकिन इसके विपरीत दूसरा प्रश्न उठता है कि मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है तो भी मनुष्य क्यों अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता है ? क्या उक्त समस्याओं को सुलझाने का कोई उपाय है ? इसका उत्तर है-हाँ। आगे इस अनुसंधान को पूरा अवश्य जानिये और अपनी समस्याओं को सुलझाईये।

"सिद्धान्त, शोध की सफलता का आधार है।"

भूमिका:- जिसप्रकार मकान बनाने के लिए ठोस और मजबूत नीव की आवश्यकता होती है उसीप्रकार अनुसंधान के लिए भी ठोस सिद्धान्त अर्थात पूर्व में शोध किए गये प्राकृतिक अथवा भौतिक सिद्धान्त की जानकारी होना आवश्यक है। भौतिक तत्त्वों के गुण तथा क्रिया-कलापों के संबन्ध में वर्तमान वैज्ञानिकों के द्वारा बहुत अनुसंधान किये गये हैं। दूसरीओर प्राकृतिक सिद्धान्तों के संबन्ध में भारतीय ऋषि-मुनियों के द्वारा पर्याप्त अनुसंधान सनातन संस्कृति, वेद, पुराण, रामचरितमानस, उपनिशद इत्यादि अनेक शास्त्रों में उपलब्ध हैं। अतः विज्ञान एवं सनातन संस्कृति के प्रयोग तथा शास्त्रोक्त प्रमाण प्रस्तुत शोध के लिए मजबूत अर्थात् ठोस आधार सावित होंगे। जिस प्रकार मजबूत भवन के लिए ठोस नीव आधार प्रदान करती है। उसी प्रकार विज्ञान की शोध तथा सनातन संस्कृति से युक्त शास्त्र इस शोध के लिए ठोस आधार सिद्ध होंगे।

ईश्वर ने मनुष्य को एक बहुत बड़ी शक्ति प्रदान की है जो कि, अन्य प्राणियों के लिए दुलर्भ है। यह शक्ति मनुष्य के लिए रामबाण सिद्ध होती है। वह जो कुछ भी पाना चाहता है वह करतलगत हो जाता है। इस शक्ति को हम इच्छा शक्ति के नाम से जानते हैं। तुलसीकृत रामचरितमानस में इस शक्ति की महिमा का गुणगान निम्नानुसार किया गया है:-

"जो इच्छा करिहौ मनमाही राम कृपा कछु दुलर्भ नाहीं।।"

अर्थात् आप मन में जो भी इच्छा करोगे श्रीराम की कृपा से वह प्राप्त हो जावेगा। इतने बड़े आश्वासन के बाद इच्छानुसार संतान प्राप्त क्यों नहीं हो सकेगी। इसी विश्वास के आधार पर इस शोध कार्य के लिए प्रयास करते हैं। मानव समाज की इच्छाआओं की पूर्ति के लिए प्रस्तुत शोध रामवाण औषधि सिद्ध होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अध्याय क्रमांक 1

I. शीर्षक का अध्ययन:

I.1 कठिनाईयों का ब्यान:-

"प्रकृति सांसारिक क्रिया-कलापों की नियंत्रक है।"

प्रायः हम सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि यह संसार प्रकृति के नियमों से संचालित है। ब्रह्माण्ड में सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है। सभी ग्रह और उपग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। मौसम चक्र भी प्रकृति के नियमानुसार अपने निधार्रित समयानुसार सर्दी, गर्मी, वर्षात् और वसंत ऋतु आते और जाते रहते हैं। संसार के सभी प्राणीं अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार सोते और जागते हैं। भूख लगने पर भोजन ग्रहण करते हैं। शरीर के लिए अनुपयुक्त पदार्थ पसीना, पेशाब और मल समयानुसार अपने-अपने तरीके से विषर्जित होते रहते हैं। इन क्रियाओं को थोड़े समय के लिए इच्छा के अनुसार रोका जा सकता है लेकिन पूर्ण रोक लगाना संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि सांसारिक सभी क्रियायें प्राकृतिक नियमों से नियंत्रित होती हैं अर्थात् मनुष्य की मनमानी नहीं चल सकती। दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति में सबसे बड़ी बाधा प्राकृतिक नियम ही हैं। इसीलिए देखने में आता है कि सभी मनुष्यों की इच्छानुसार संतान नहीं होती। किसी व्यक्ति के लड़कियाँ ही लड़कियाँ होती हैं। तथा किसी व्यक्ति के परिवार में लड़के ही लड़के होते हैं। तथा किसी व्यक्ति के बहुत चाहने पर भी कोई संतान नहीं होती। ऐसा क्यों होता है ? इस विषय पर आगे प्रमाण सहित चर्चा करेंगे। इतना ही नहीं वल्कि इसका समाधान भी बताऐंगे, चूंकि यहाँ सिर्फ कठिनाईयों की चर्चा कर रहे हैं।

1.2. अध्ययन का उद्देश्य:

"वसुधैवकुटुंबकम् अर्थात् संपूर्ण विश्व एक कुटुम्ब है।"

इच्छानुसार संतान का उद्देश्य परिवार सुखी और संपन्न हो। ग्राम सुखी और संपन्न हो। देश सुखी और संपन्न हो। तथा संपूर्ण संसार सुखी और संपन्न हो। इस भावना के साथ इच्छानुसार संतान प्राप्त करने का यह शोध संकल्प किया गया है। परिवार को, देश को और विश्व को सुखी संपन्न बनाने के लिए सुसंस्कारी संतान का होना आवश्यक है। दूसरीओर परिवार में और देश में लड़का और लड़की का अनुपात समान हो तभी परिवार और देश और विश्व सुखी और सम्पन्न बनेगा। अगर लड़का और लड़की का अनुपात समान नहीं होगा तो व्यभिचार, लड़ाई-झगड़े, अशान्ति बढ़ेगी, अत्याचार बढ़ेगा। मर्यादाओं का पालन नहीं होगा। अतः सभी बिन्दुओं पर विचार करके इच्छानुसार संतान प्राप्त करनेवाली शोध करने का निर्णय लिया गया। वर्तमान समय में सुसंस्कारी संतानों की देश ही नहीं वल्कि समस्त संसार को महती आवश्यकता है। इसलिए इस शोध का उद्देश्य सार्वभौमिक है।

अध्याय क्रमांक 2 संकल्पना के अनुसार रूपरेखा (conceptual framework)

2.1. शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology of problem)

- **आध्यात्मिक दृष्टिकोंण-**

प्रत्युष्ट ं रक्षः प्रत्युष्टा S अरातयो निष्टाप्त ं रक्षो

निष्टप्ता S अरातयः । उर्वन्तरिक्षमन्वेमि।।

(यजुर्वेद 1/7)

(वेदों का दिव्य संदेश पेज क्रमांक 248, लेखक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य)

भावार्थ- मनुष्यों का यह कर्तव्य है कि वह अपना दुष्ट स्वभाव त्याग कर, विद्या और धर्म के प्रसार के द्वारा दूसरों को भी अधर्म और दुष्टता के व्योहार से बचाने का प्रयत्न करें। ज्ञान और सुख देकर सभी व्यक्तियों को विद्यावान, धर्मशील और पुरुषार्थवान बनाना ही हमारा परम कर्तव्य हैं।

संदेश- *मानव जीवन सतत संघर्ष और आंतरिक अंतर्द्वंद्व की कहानी हैं।* अंतरात्मा की पुकार और इंद्रिय सुख के प्रलोभन के मध्य निरंतर एक रस्साकशी होती रहती हैं। हम दृढ़तापूर्वक परम लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहते हैं किंतु वाह्य जगत के प्रलोभन हमें विपरीत दिशा में खींचते हैं। शरीर हमारे मानसिक आदर्शों के साथ सहयोग नहीं करता और हम इच्छाओं, वासनाओं के दास बन जाते हैं। इंद्रिय सुख के पीछे भागते रहने से अंततः हमारा विनाश हो जाता हैं। हम यह भूल जाते हैं कि शाश्वत आनंद की प्राप्ति इंद्रिय सुख के त्याग में है न कि इंद्रिय सुख के भोग में।

परमपिता परमेश्वर ने हमें यह दुर्लभ मानव जन्म क्या केवल अपने इंद्रिय सुख के लिए भटकने और तिकड़में लड़ाने हेतु ही दिया है? 'खाओ, पियो और मौज करो' क्या यही इस जीवन का लक्ष्य है ? अपनी इच्छाओं और लालसाओं की पूर्ति के लिए हम हर प्रकार के उचित-अनुचित कार्य करते रहते हैं पर क्या इससे हमारी तृप्ति हो जाती है ? नहीं, एक के बाद एक, हमारी इच्छाएं हनुमान जी की पूँछ के समान बढ़ती ही जाती हैं, आग और तेज होती जाती हैं। क्या उन्हें शांत कर सकना संभव हो पता है ? यही तो मानव जीवन की विडंबना है कि हम अपनी अंतरात्मा की पुकार को अनसुना करके परमानंद की प्राप्ति के मार्ग से भटक कर क्षणिक सुख के प्रेय मार्ग पर चल निकलते हैं। माया, मोह, लोभ में फंस कर भौतिक वस्तुओं की प्रति आसक्ति को ही सच्चा सुख समझते रहते हैं। इसके लिए हर प्रकार के दुराचार और दुष्ट आचरण करने में हमें जरा भी हिचक नहीं होतीं। इससे अपनी भी हानि होती है और समाज में भी हर ओर अराजकता, कष्ट, क्लेष और दुःख का वातावरण बनता हैं।

ईश्वर की यह आज्ञा थी कि मनुष्य अपने दुष्ट स्वभाव का त्याग करें और ज्ञानवान तथा धर्मशील बनकर स्वयं अपना भी उत्थान करें और अपने परिवार एवं समाज में भी सबको उन्नति के श्रेय मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। ईश्वर की यही दिव्य वाणी हमारी अंतरात्मा से निरंतर निकलती रहती है, पर यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि हम उसे सुनते ही नहीं और यदि सुनते भी हैं तो सुनकर अनसुना कर देते हैं।

- **प्राकृतिक सिद्धान्तः**

सूयवसाद्भगवती हि भूया अथोवयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।।

(ऋग्वेद 1/164/40)

(वेदों का दिव्य संदेश पेज क्रमांक 350, लेखक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य)

भावार्थ- *संतान विद्यावान हो इसलिए माताएं ज्ञानवान बनें।* जो स्त्रियां सदाचारी पुरुषों से विवाह कर संतान उत्पन्न करती हैं और उन्हें संस्कारवान बनाती हैं उनसे समाज का गौरव बढ़ता हैं। उनका अनुदान गायों के समान पवित्र होता हैं।

संदेश- नारी अपने विभिन्न रूपों में सदैव मानव जाति के लिए त्याग, बलिदान, धैर्य, सहिष्णुता, स्नेह व श्रद्धा का जीवन बिताती रही हैं। उसके नेत्रों में करुणा, सरसता और आनंद के दर्शन होते हैं। उसकी वाणी जीवन के लिए अमृत का स्रोत हैं उसकी मधुर मुस्कान में, संसार की समस्त निराशा बहाकर, कठिनता को मिटा देने की अपूर्व क्षमता हैं। पत्नी के रूप में वह पति की अर्धांगिनी है, सहधर्मिणी हैं। यह पत्नी की कोमल कुशलता का ही प्रतिफल है कि वह पति की पशुता एवं उच्छृंखलता को नियंत्रित करके उसे परिवार के व्यवस्थित वातावरण में बांधकर रखती है तथा सदग्रस्थ की गरिमा प्रदान करती हैं। विद्या, वैभव, वीरता, सरसता, ममता, करुणा आदि गुणों से परिपूर्ण स्त्री जब सुसंस्कारित, सदाचारी एवं चरित्रवान व्यक्ति से विवाह करती है तो परिवार व समाज में सर्वत्र उनके सद्गुणों की सुगंध से यश व कीर्ति फैलती हैं। पत्नी का सर्वोत्तम रूप उसके मातृत्व में निहित है और इसी से व्यक्तित्व को पूर्णता एवं गरिमा प्राप्त होती हैं। संतान उत्पादन एक शारीरिक मनोरंजन की परिणति नहीं वरन् एक महान उत्तरदायित्व है जिसके दूरगामी परिणाम होते हैं। गर्भावस्था में उसका विकास, जन्म देने की कष्टदायक पीड़ा, फिर उसका लालन-पालन आहार-बिहार, शिक्षा, संस्कार आदि अनेकानेक समस्याएं इसके साथ जुड़ी रहती हैं। माता-पिता को यह इनके निदान की उचित व्यवस्था बनानी होती है। इन सारे उत्तरदायित्वों को वहन कर सकने की क्षमता हो तभी माता-पिता को यह विचार करना चाहिए कि वे संसार में एक नए जीव को जन्म देने का पुरुषार्थ करें। पहले से ही अपने शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक धरातल एवं पारिवारिक वातावरण को इतना उत्कृष्ट बना लें कि जन्मने वाली संतान हर दृष्टि से परिष्कृत एवं सुसंस्कृत ही सिद्धं हो। जिस प्रकार अन्य सारे कार्यों के लिए पहले से तैयारी कर लेते हैं, उसी प्रकार इस अति महत्वपूर्ण आयोजन के लिए भी तैयारी में किसी प्रकार की चूक नहीं करनी चाहिए। माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव बच्चे में गर्भ के समय से ही आ जाता है और ये उसमें इतनी गहरी समाये रहते हैं कि जीवन भर साथ नहीं छोड़ते।

बिना समुचित तैयारी के कुसंस्कारी और अविकसित संतान उत्पन्न करना स्वयं अपने लिए तो परेशानी पैदा करता ही है, यह समाज और देश के साथ भी बहुत बड़ा विश्वासघात हैं। कुसंस्कारी, दुर्गुणी, व्यसनी नागरिकों से भरा हुआ समाज सामूहिक रूप से पतन की गर्त में ही गिरता जाता हैं। ऐसी संतान स्त्री के मातृत्व को भी कलंकित करती हैं। समाज में प्रतिभाशाली, उत्कृष्ट व्यक्तियों की संख्या तभी बढ़ सकती है जब सुयोग्य, सद्गुणी, सुविकसित और सुसंस्कारित संतान को जन्म देने का पवित्र कर्म पूरी श्रद्धा व निष्ठा से किया जाए।

2.2. समाज शास्त्र की समस्या (Sociology of problem) :
राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण के लिए भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ऋषि-मुनियों और मूर्धन्यों के समागम होते रहे है। इसकी छोटी सी झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। सुसंस्कृत संतान प्राप्त करना मनुष्य का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। इस उत्तरदायित्व को संपन्न करने के लिए दंपत्ति को पूर्व तैयारी करनी चाहिए।

एकदा नैमिषारण्ये ज्ञान संगम उत्तमः।

मनीषिणां मुनीनां च बभूव परमाद्भुतः।। 1।।

काश्याः पाटलिपुत्रस्य ब्रह्मावर्तस्य तस्य च।

आर्यावर्तस्य सर्वस्य यानि क्षेत्राणि संति तु।। 2।।

कपिलवस्तोर्विशेषेण तेभ्यः सर्वेऽपि संगता।

प्रज्ञापुरूषसंज्यास्ते मूर्धन्या धन्यजीवनाः।। 3।।

एक बार मुनि-मनीषियों का एक उत्तम ज्ञान संगम नैमिषारण्य क्षेत्र में हुआ, जो अपने आप में बड़ा अद्भुत था। आर्यावर्त, ब्रह्मावर्त, काशी, कपिलवस्तु, पाटिलपुत्र, आदि समीप वर्ती क्षेत्रों के सभी मूर्धन्य उत्तम जीवन यापन करने वाले प्रज्ञा पुरुष उसमें एकत्रित हुए।। 1-3।।

अर्थ-ज्ञान संगम इस भूमि की, ऋषि युग की विशेषता रही है। ज्ञान की अनेक धाराएँ हैं। अपने-अपने विषयों के विशेषज्ञ उन्हें समयानुरूप विकसित करते रहते हैं। विकसित धाराओं का उपयोग जनहित में किया जाता है। वह तभी संभव है, जब भिन्न-भिन्न धाराओं में हुए विकास को जन

आवश्यकता के अनुरूप मिलाकर जन साधारण तक पहुंचाने योग्य बनाया जाय। प्राचीन काल में अध्यात्म और इस युग में विज्ञान का विकास इसी ढंग से संभव हुआ है।

ज्ञान धाराओं का संगम तब संभव हो पता है, जब उन्हें समझने और अपनाने वाले मूर्धन्य श्रेष्ठ व्यक्ति उसमें रुचि लें। जिन्होंने उन्हें विकसित किया, ऐसे प्रज्ञा-पुरुष और जिन्होंने उन्हें जीवन सिद्ध बनाया, ऐसे उत्तम जीवन जीने वाले अग्रगामी, दोनों ही प्रकार के सत्पुरुष इस संगम में एकत्रित हुए हैं।

औषधियाँ बनाई जाती हैं फिर उन्हें निश्चित क्षेत्र में प्रयुक्त किया जाता है। सेना के लिए अस्त्र विकसित किए जाते हैं। कुशल व्यक्तियों द्वारा उनका प्रयोग-परीक्षण किया जाता है। उसके आधार पर विकसित करने वाले तथा प्रयोग करने वाले गंभीर परामर्श करते हैं, संशोधन करते हैं, तब वह संगम बनता है, जिससे व्यापक स्तर पर उन उपलब्धियां को व्यवहार में लाया जा सके।

टीका-समागम पहले भी समय-समय पर होते रहते थे, ताकि विचार मंथन से समुद्र मंथन की तरह कोई बहुमूल्य रत्न निकलें; मनीषियों को अधिक सोचने और करने का सामयिक प्रकाश मिले; साथ ही जन समुदायों को कठिनाइयों से छूटने और प्रगति पथ पर अग्रसर होने का अवसर उपलब्ध होता रहे। इस बार का समारोह भी इसी प्रयोजन के लिए नियोजित किया गया था। (4-7)

अर्थ-समुद्र मंथन से विचार मंथन अधिक लोकोपयोगी है। समुद्र मंथन से रत्न एक बार ही निकले थे, पर विचार मंथन से रत्नों की प्राप्ति हर काल में होती रहती है। इसलिए मनीषी लोग विचार मंथन के लिए एकत्र होते रहते हैं। यों विचार मंथन अकेले भी होता है; पर जब कई मनीषी एक साथ बैठकर विचार मंथन करते हैं, तो एक दूसरे के विचारों को उभारने वाली प्रेरणा से, स्फूर्ति से सामान्य की अपेक्षा अनेक गुण लाभ मिलता है।

सभी उपनिषद, दर्शन आदि ऋषियों के विचार मंथन से उपजे रत्न हैं। वह अनंत काल से अगणित व्यक्तियों को लाभ पहुंचाते आ रहे हैं। योग और चिकित्सा के सूत्र भी ऐसे ही विचार मंथन से विकसित हुए हैं। प्राचीन काल में मंत्री-परिषदें राज्य की, समाज की और विभिन्न समस्याओं के समाधान इसी प्रकार विचार मंथन से निकलती थे। ऋषिगण भी अपने-अपने आश्रमों-आरण्यकों में यह क्रम चलाते थे। जब तक यह परिपाटी चली, तब तक समय अनुकूल विचारों, आदर्शों की शोध होती रही है, आचरण होते रहे और सामाजिक उत्कर्ष का क्रम सतत चला रहा।

टीका-जिज्ञासाओं के समाधान के लिए उसे समागम में विशेष व्यवस्था की गई थी। प्रातः नित्य कर्म से निवृत होने पर सत्संग चलाने का निश्चय उस रमणीय तपोवन में हुआ। एक सप्ताह तक यह क्रम चलना था। सो उसी दिन उसका विधिवत्त शुभारंभ हुआ। सत्राध्यक्ष आश्वलायन थे। ऐसी व्यवस्था थी कि प्रश्न कोई भी कर सकते थे और उत्तर केवल सत्राध्यक्ष ही देते थे।। 8-11।।

टीका-प्रथम दिन की जिज्ञासा प्रस्तुत करते हुए सदाचारी मुनि श्रेष्ठ ऐतरेय ने पूछा-'हे देव ! मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त सभी सुविधाएं प्राय: सभी को समान मात्रा में उपलब्ध हैं। पर उनमें कुछ तो पेट-प्रजनन भर तक सीमित रहकर कोल्हू के बैल के समान मरते-खपते सांसें पूरी कर लेते हैं। कुछ पतित-तिरस्कृत बनते, प्रताड़नाएँ सहते दिन गुजारते हैं। अपने लिए संकट खड़े करते और दूसरों को सदा गिराते-सताते रहते हैं।

टीका-किंतु कुछ ऐसे भी होते हैं जो स्वयं ऊंचे उठते दूसरों को उठाते, पार करते श्रेय प्राप्त करते हैं। ऐसे देवोपम महामानव को यश सम्मान और सहयोग भी मिलता है। असंख्य उनसे प्रेरणाएँ ग्रहण करते हैं। इतिहासकार उनके गुण, गाथाएं स्वर्ण अक्षरों में लिखते हैं। इस भिन्नता का कारण क्या है सो समझाकर कहिए।। 17-20।।

अर्थ-प्रश्नकर्ता ऋषि ने मनुष्यों को तीन स्तरों में विभाजित किया है।

1. वे जो मनुष्य जन्म का भी पशु-स्तर तक ही प्रयोग करते हैं। विचार, भावना एवं विशेष क्रियाशक्ति का प्रयोग ही नहीं करते। ढ़र्रे का जीवन भर जीते हैं।
2. वे, जो मनुष्य को प्राप्त विशेषताओं के उपयोग के लिये लालायित तो रहते हैं, पर उन्हें उत्थान की जगह पतन की उल्टी दिशा में लगा देते हैं।
3. तीसरे वे, जो मानवीय विशेषताओं का सही ढ़ंग से प्रयोग करने में सफल हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता यह जानना चाहते हैं कि एक ही योनि के प्राणी मनुष्य में इतना अन्तर क्यों हो जाता है ?

आश्वलायन बोले-हे तात ! भगवान ने सभी मनुष्य समान बनाए हैं। उस दयानिधि को सभी पुत्र समान रूप से प्यारे हैं। सभी को उसने समान सुविधाएं तथा परिस्थितियाँ भी प्रदान की हैं। लोग अपनी इच्छा अनुसार मार्ग चुनते हैं और जहां वह मार्ग जाता है, वहां जा पहुंचते हैं। स्वार्थ-परायणों को नर-पशु कहते हैं। वह अपने काम से काम रखते हैं। दूसरों की सुख-सुविधा में हाथ नहीं बँटाते जो पाते हैं, निगलते रहते हैं। किसी के दुख में उन्हें सहानुभूति नहीं उपजती। सहायता करने की इच्छा भी नहीं होती। लोक और परलोक में अपनी ही सुविधाएँ खोजते हैं। ऐसों को किसी की सहानुभूति भी नहीं मिलती। फलतः नीरस जीवन जीते हुए मौत के दिन पूरे करते हैं।। 21-27।।

अर्थ-दयालु परमपिता प्यार के नाते विकास के अवसर सभी को देता है। विकास के अवसरों का लाभ उठाकर जो व्यक्ति योग्यता बढ़ा लेते हैं, उन्हें वह महत्वपूर्ण कार्य योग्यताओं के आधार पर सौंपता है। विकास के अवसर और सौंपे गए कार्य, इन दोनों में अंतर न कर पाने से मनुष्य समझता है कि भगवान किसी को अधिक अवसर देता है, किसी को कम।

मार्गो के लक्ष्य निश्चित हैं, पर मनुष्य चुनते समय मार्ग के लक्ष्य की अपेक्षा मार्गों की सुविधाओं को रुचि अनुसार चुन लेता है। जो मार्ग पकड़ लिया, उसी के गंतव्य पर पहुंचना पड़ता है, फिर यह चाह महत्व नहीं रखती की कहां पहुंचाना चाहते थे।

जो स्वार्थ तक ही सीमित है वे नर-पशु हैं। पशु अपने शरीर निर्वाह, अपनी रक्षा और अपने वंश विस्तार से अधिक सोच नहीं पाते। मनुष्य सोचने की क्षमता रखता तो है; पर स्वार्थवश पशुओं की सीमा से आगे बढ़ता नहीं, इसलिए नर-पशु कहलाता है।

मनुष्य के उपरोक्त वर्गो को कहानियों के द्वारा औ अच्छी तरह समझा जा सकता है। ये कहानियाँ निम्नानुसार हैं :-

सिकंदर का पश्चातापः सिकंदर अपनी लिप्सा शांत करने के प्रयास में जीवनभर मार-काट करता रहा। विश्व विजेता भी कहलाया; परंतु मरते समय जब उसने यह देखा कि जिसके लिए इतना अनाचार किया, वह सब यकायक यूँ ही छूटा जा रहा है, तो उसे अत्यंत पश्चाताप हुआ; साथ जाने लायक संतोष कमाया नहीं था। सिकंदर फूट-फूटकर रोया और कहा-''मेरे खुले हाँथ शव यात्रा में बाहर निकाल देना, ताकि लोग यह देख लें कि सिकंदर खाली हाँथ गया।''

ऐसा ही पश्चातप दुर्योधन को करना पड़ा था, जब उसकी जाँध टूट चुकी, भगवान कृष्ण उसके पास पहुँचे, जब उसने स्वीकार किया कि धर्म-अधर्म मैं पहचानता था; परंतु अपनी लिप्सा के कारण अधर्म से बच न सका, धर्म में प्रवृत न हो सका। अब पछताने से होता भी क्या।

दूसरी कथा प्रज्ञापुराण भाग -2 पेज 21,

शीर्षकः- भारत माता के सच्चे सपूतः

डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंगाल की इनी-गिनी प्रतिभावों में से एक थे। इंगलैड से बैरिस्ट्री पास करके लौटे तो परिवार को उनसे धनोपार्जन की बड़ी आशा थी। पर घर में गुजारे की व्यवस्था पहले से ही थी। इसलिए वे उस ओर तनिक भी ध्यान न देकर समय की आवश्यकतानुसार देश सेवा के कार्यों में जुट पड़े।

बंगाल के दुर्भिक्ष में उनने जमकर कार्य किया। बँटवारे के समय सांप्रदायक दंगों की आग बुझाने में कुछ उठा न रखा। केन्द्र में वितमंत्री बने तो बेरोजगारों को रोजगार देने के लिए उनने नई स्थापनाएँ कीं।

सरकार से मतभेद होने पर उन्होंने जनसंघ की स्थापना की। उन दिनों अनेक गुत्थियों को सुलझाने में लगे रहे। ऐसे नर-रत्नों को भारत माता का सच्चा सपूत ही कहा जायगा।

2.3. दिये हुए विषय या आँकड़ों का संग्रह (Collection of Data) :-
प्रज्ञापुराण भाग 2 रचयिता वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
2.4. आँकड़ों का विश्लेषण (Analysis of Data):

उपरोक्त कथाओं के माध्यम से कहने का तात्पर्य है कि आप "इच्छानुसार संतान" चाहते हैं तो आपको यह स्वयं चुनना है कि आपको कैसी संतान चाहिए-सिकंदर जैसी जो अंतिम समय में पश्चाताप से फूट-फूटकर रोता हुआ गया। या दुर्योधन जैसी जो पश्चाताप करते हुए मरा। या दूसरा विकल्प भारत माता के सच्चे सपूत डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी के जैसा।

आप अपना विकल्प जो भी चुने लेकिन संतान पाने के पूर्व उसकी वैसी ही तैयारी कर लेना चाहिए; क्योंकि संतान को जन्म देना एक बड़ा उत्तरदायित्व है, इसे मनोरंजन मात्र न समझें अन्यथा राक्षस ही जन्म लेंगे जो कि आपके परिवार के साथ-साथ देश के लिए भी घातक होंगे।

अध्याय क्रमांक 3 (Chapter 3. Methodology)

- **व्यवस्था विज्ञान (शोध का तरीका)**
  इच्छानुसार संतान प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम हमें लिंकेज के सिद्धान्त पर विचार करना चाहिए। इस सिद्धान्त को समझने के लिए हमें आधुनिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक ऋषियों के अनुसंधानों पर आधारित अध्यात्म को समझना होगा। उपरोक्त अध्ययन के अनुसार हमने जाना कि भौतिक तत्त्वों एवं प्राणियों के क्रिया-कलापों में साम्य है। अतः सर्व प्रथम भौतिक तत्त्वों के लिंकेज के अनुसंधानों पर विचार करते हैं। लिंकेज को जानने से पहिले पदार्थ और प्राणी की क्रियाओं में साम्य पर विचार करते हैं।

सिद्धान्तः-"पदार्थ और प्राणीकी क्रियाओंमें साम्य देखा गया है।"
अ. पदार्थः-(मूल तत्त्व पदार्थकी आत्माका प्रतीक है जो कि अम्ल और क्षारसे क्रिया करके भिन्न-भिन्न स्वरूपमें बदलता है।)

1. धातुएँ अम्ल और क्षार से क्रिया करके अलग-अलग प्रकारके स्वरूपको धारण करते हैं तथा विश्लेषण करनेपर पुनः मूल स्वरूप धारण कर सकते हैं।

उदाहरणः- कापर, सल्फ्यूरिक अम्लके साथ क्रिया करके कापर सल्फेट के रूपमें सामने आता है। उल्लेखनीय है कि कापर एक धातु है जबकि कापरसल्फेट धातु नहीं है; एक प्रकारका लवण है। सल्फ्यूरिक अम्ल एक यौगिक है जो कि विच्छेदित होता है कापरके साथ अपना सल्फेट जोड़ता है तथा हाइड्रोजन मुक्त हो जाती है।

- $Cu + H_2SO_4 = CuSO_4 + H_2\uparrow$

जस्ता, सल्फ्यूरिक अम्लके साथ क्रिया करके जिंकसल्फेट बनता है तथा हाइड्रोजन गैस बनती है।

- $Zn + H_2SO_4 = ZnSO_4 + H_2\uparrow$

इसीप्रकार दो गैसें क्रमानुसार हाइड्रोजन एवं क्लोरीन गैसें आपसमें क्रिया करके जुड़ती हैं और हाईड्रोक्लोरिक अम्ल बनाती हैं। उल्लेखनीय है कि हाइड्रोजन और क्लोरीन दोनों गैसें हैं।

1. हाइड्रोजन गैसका लिटमस पेपर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् इसकी प्रकृति न्यूट्रल है; उदासीन है। शुद्ध हाइड्रोजन एक ज्वलनशील गैस है पर जलनेमें सहायता नहीं करती।

2. शुद्ध हाइड्रोजन बिना आवाजके हवामें हल्की नीली लौ से जलकर पानी बनाती है। पर हाइड्रोजन और हवाका मिश्रण धड़ाके के साथ जलता है।

$$^2H_2 + O_2 = {}^2H_2O$$
$$H_2 + Cl_2 = {}^2HCl$$

3. हाइड्रोजन, तत्त्वों से भिन्न-भिन्न दशाओंमें संयोग करके उनके हाइड्राइड बनाती है। यह साधारणतया धातुओंसे संयोग नहीं करती। यह केवल क्षार-धातुओं, क्षारीय-पार्थिव धातुओं और दुष्प्राप्य-पार्थिव धातुओं से प्रतिक्रिया करती है और उनके हाइड्राइड बनाती है उदाहरणार्थ, NaH, CaH_2, and LaH_3 धातुओंके हाईड्राइड अस्थायी और पानीसे प्रतिक्रिया करके फिर हाइड्रोजन देनेवाले होते हैं।

4. हाइड्रोजन, निष्क्रिय गैसों (inert gases) को छोड़कर सभी अधातुओंसे प्रतिक्रिया करके गैसीय या उड़नशील हाईड्राइड बनाती है। ये हाईड्राइड काफी स्थायी होते हैं।

$$^2H_2 + O_2 = {}^2H_2O$$
$$H_2 + F_2 = {}^2HF$$
$$H_2 + Cl_2 = {}^2HCl$$
$$H_2 + Br_2 = {}^2HBr$$
$$H_2 + I_2 = {}^2HI$$
$$H_2 + S = H_2S$$
$$^3H_2 + N_2 = {}^2NH_3$$

5. **अवकारक गुण (Reducing properties)** हाइड्रोजन विद्युत-धनात्मक (electro- positive) होनेके कारण विद्युत-ऋणात्मक (electro-negative) तत्त्वोंसे सुगमतासे संयोग कर लेती है और इसप्रकार अवकारक का कार्य करती है। उदाहरणार्थ यह बहुत-सी धातुई आक्साइडोंको धातुओंमें (जैसे Cu और Fe के आक्साइडोंको अवकृत करती है। अधिक विद्युत-धनात्मक धातुओं जैसे क्षार धातु, क्षारीय पार्थिव धातु (alkaline earth metals), जिंक और अल्युमिनियमके आक्साइडोंको अवकृत नहीं करती।

$$Cu_2O + H_2 = Cu_2 + H_2O$$
$$^2FeO_2 + {}^4H_2 = {}^2Fe + {}^4H_2O$$

भिन्न-भिन्न यौगिकोंमें उपस्थित क्लोरीन, सल्फर, नाइट्रोजन आदि विद्युत-ऋणात्मक तत्त्वोंसे संयोग करके उनके हाईड्राइड बनाना भी हाइड्रोजनके अवकारक गुणको प्रदर्शित करता है।

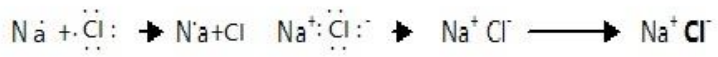
यहाँ उल्लेखनीय है कि कापर आक्साइड और फेरस आक्साइड में क्रमशः कापर और आयरन तत्त्व उपलब्ध हैं जो अवकृत होकर पुनः मूल तत्त्वके रूपमें आ जाते हैं।

2. संयोजकताका इलेक्ट्रानिक सिद्धान्तः– परमाणु-रचना सम्बन्धी ज्ञानने हमें परमाणुकी केवल आन्तरिक रचनाके सम्बन्धमें जानकारी नहीं दी बल्कि परमाणुओंके परस्पर संयुक्त होनेके समुचित कारणोंका भी बोध कराया है। परमाणुओंकी रासायनिक क्रियाएं उनके सबसे बाहरी चक्रके इलेक्ट्रानोंकी संख्या पर निर्भर करती है। इन इलेक्ट्रानोंको संयोज्य-इलेक्ट्रान (valency electrons) कहते हैं।

निष्क्रिय गैसों (inert gases) के सबसे बाहरी चक्रमें 8 इलेक्ट्रान होते हैं (हीलियममें 2 ही इलेक्ट्रान होते हैं क्योंकि इसमें इलेक्ट्रानोंकी कुल संख्या 2 होती है।) ये गैसें दूसरे तत्त्वोंसे क्रिया नहीं करती हैं। इसका कारण यह है कि इनके अन्तिम चक्र पूर्ण होते हैं। अतः इनकी अवस्था आदर्श स्थाई मानी जाती है।

निष्क्रिय गैसोंके अतिरिक्त अन्य तत्त्वोंमें अन्तिम चक्र अपूर्ण होते हैं और वे इलेक्ट्रान त्यागकर या ग्रहण करके आदर्श स्थाईरूपमें परिवर्तित हो जाने, अर्थात् अपनी परमाणु-रचनाको निकटतम निष्क्रिय गैसकी भाँति बना देनेकी प्रवृति रखते हैं। इस प्रवृतिके फलस्वरूप किसी तत्त्वका परमाणु जितने इलेक्ट्रान त्यागता अथवा ग्रहण करता है, वह उस तत्त्वकी संयोजकता कहलाती है। इलेक्ट्रानोंके इस प्रकार हुए प्रबन्धोंको परमाणु-बन्धन (atomic linkage) कहते हैं। ये निम्न तीन प्रकारके होते हैं-

1. ***विद्युत-बन्धन (Electrovalent linkage)*** इस प्रकारके बन्धनमें तत्त्व इलेक्ट्रानोंकी प्राप्ति या त्याग द्वारा निष्क्रिय गैसोंकी-सी रचना प्राप्त करते हैं। उदाहरणार्थ-सोडियम और क्लोरीनके संयोगसे सोडियम क्लोराइडका बनना-सोडियमकी परमाणु-रचना (2,8,1) होती है अर्थात् उसके बाहरी चक्रमें एक इलेक्ट्रान होता है। यह सात इलेक्ट्रान ग्रहण करके या एक इलेक्ट्रान त्याग करके स्थायी अवस्था प्राप्त कर सकता है। क्लोरीनकी परमाणु-रचना (2,8,7) होती है, अर्थात् उसके अन्तिम चक्रमें सात इलेक्ट्रान होते हैं। यह एक इलेक्ट्रान ग्रहण कर या सात इलेक्ट्रान त्यागकर स्थायी अवस्था प्राप्त कर सकती है। सोडियमके लिए सात इलेक्ट्रान ग्रहण करनेकी अपेक्षा एक इलेक्ट्रान त्याग करना और क्लोरीनके लिये सात इलेक्ट्रान त्याग करनेकी अपेक्षा एक इलेक्ट्रान ग्रहण करना अधिक आसान है। अतः जब सोडियम और क्लोरीन सम्पर्कमें आते हैं तो सोडियम अन्तिम चक्रका एक इलेक्ट्रान क्लोरीनके अन्तिम चक्रमें चला जाता है और इस तरह सोडियम तथा क्लोरीनकी परमाणु-रचना क्रमशः नियान और आर्गनके समान हो जाती है।



सोडियमका परमाणु एक इलेक्ट्रान त्यागकर विद्युत-धनात्मक आयन (electro-positive ion) बन जाता है। इसी प्रकार क्लोरीनका परमाणु एक इलेक्ट्रान ग्रहण कर विद्युत-ऋणात्मक (electro-negative ion) बन जाता है। इन आयनोंके बीच एक स्थिर विद्युतीय आकर्षण (electro-static attraction) रहता है। इस प्रकारसे बने यौगिकोंको ध्रुवीय या विद्युत-बन्धन यौगिक (polar or electrovalent compound) कहते हैं। तथा इन यौगिकोंमें प्रदर्शित हुई संयोजकता, विद्युत संयोजकता (electro valency) कहलाती है।

(संदर्भः अकार्बनिक रसायन पेज 145)

अम्ल, क्षार तथा लवण सभी विद्युत-बन्धन यौगिक होते हैं। पानीमें घोलनेपर इनका स्थिर-विद्युतीय आकर्षण कम हो जाता है (पानीके उच्च 'डायइलेक्ट्रिक स्थिरांक' के कारण) और ये आयनीकृत हो जाते हैं।

ख. सह-संयोजकीय बन्धन (covalent linkage) इस बन्धनमें तत्त्वोंके परमाणु स्थायी अवस्था प्राप्त करनेके लिये आपसमें इलेक्ट्रानोंका ऐसा साझा करते हैं जिससे दोनोंके स्थायी अवस्था प्राप्त करनेमें सहायता मिलती है। जो इलेक्ट्रान साझेके होते हैं उनमेंसे आधे एक तत्त्व और आधे दूसरा तत्त्व देता है और इन सबपर दोनोंका बराबर अधिकार होता है। इस बन्धन द्वारा बने हुए यौगिक सह-संयोजकीय यौगिक (covalent compound) कहलाते हैं और इनमें प्रदर्शित हुई संयोजकताको सह-संयोजकता (covalence) कहते हैं। सह-संयोजकीय बन्धन, विद्युत-बन्धनकी अपेक्षा काफी मजबूत होता है और इसी कारण सह-संयोजकीय यौगिक साधारणतया आयनीकृत नहीं होते। अधिकांश कार्बनिक यौगिक सह-संयोजकीय होते हैं।

उदाहरणः

1. आक्सीजनके अणुका बनना. आक्सीजनका अणु दो परमाणुओंके मध्य इलेक्ट्रानोंके दो जोड़के साझेसे बनता है।



2.

ग. दाता-बन्धन (Co-ordinate linkage):- यह भी एक प्रकारका सह-संयोजकीय बन्धन होता है; अन्तर केवल इतना ही है कि सह-संयोजकीय बन्धनमें युक्त परमाणु इलेक्टानोंके साझेमें बराबर हिस्सा लेते हैं अर्थात् जितने इलेक्ट्रान एक परमाणु साझे के लिये देता है उतने ही दूसरा, जबकि दाता-बन्धनमें युक्त होनवाले परमाणुओंमेंसे एक तो इलेक्ट्रानोंकी जोड़ी देता है परन्तु दूसरा अपने इलेक्ट्रानोंको न देकर इस जोड़ीको ले लेता है, उसे स्वीकर्ता कहते हैं।

''निष्कर्षतः निष्क्रिय गैसों (inert gases) के सबसे बाहरी चक्रमें 8 इलेक्ट्रान होते हैं (हीलियममें 2 ही इलेक्ट्रान होते हैं क्योंकि इसमें इलेक्ट्रानोंकी कुल संख्या 2 होती है।) ये गैसें दूसरे तत्त्वोंसे क्रिया नहीं करती हैं। इसका कारण यह है कि इनके अन्तिम चक्र पूर्ण होते हैं। अतः इनकी अवस्था आदर्श स्थाई मानी जाती है।

निष्क्रिय गैसोंके अतिरिक्त अन्य तत्त्वोंमें अन्तिम चक्र अपूर्ण होते हैं और वे इलेक्ट्रान त्यागकर या ग्रहण करके आदर्श स्थाईरूपमें परिवर्तित हो जाने, अर्थात् अपनी परमाणु-रचनाको निकटतम निष्क्रिय गैसकी भाँति बना देनेकी प्रवृति रखते हैं।

ब. प्राणी (मनुष्यमें योनियाँ क्या भिन्न-भिन्न स्वरूप भी बदलती है?)

पदार्थोंकी तरह मनुष्य भी दो प्रकारके देखे जाते हैं-

1. निष्क्रिय गैसोंकी तरह जो या तो प्रजनन क्रिया करने हेतु सक्षम नहीं होते जिन्हें खसुआ कहा जाता है या वे सन्तति पैदा करनेके लिये सक्षम नहीं होते जैसे कि सन्तान हीन दंपत्ति।
2. दूसरे प्रकारके वे दंपत्ति जो सन्तान उत्पन्न करनेमें सक्षम होते हैं। इस प्रकारकी दंपत्ति तीन प्रकारकी होती हैं-

- वे दंपत्ति जिनके सिर्फ लड़कियाँ ही सन्तानके रूपमें जन्म लेती हैं। इसे दाता-बन्धन (Co-ordinate linkage) के रूपमें देखा जा सकता है।
- वे जिन दंपत्तियोंके सिर्फ लड़के सन्तानके रूपमें जन्म लेते हैं। इसे दाता-बन्धन परमाणुओंमें से दूसरेकेरूपमें देखा जा सकता है जो अपने इलेक्ट्रानोंको न देकर इस जोड़ीको ले लेता है।
- वे दंपत्ति जिनके लड़के एवं लड़कियाँ दोनों प्रकारकी सन्ताने जन्म लेती हैं। इसे सह-संयोजकीय बन्धनकी तरह देखा जा सकता है। जो इलेक्ट्रान साझेके होते हैं उनमेंसे आधे एक तत्त्व और आधे दूसरा तत्त्व देता है और इन सबपर दोनोंका बराबर अधिकार होता है। इस बन्धन द्वारा बने हुए यौगिक सह-संयोजकीय यौगिक (covalent linkage compound) कहलाते हैं।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों से यह स्पष्ट है कि, पदार्थ और प्राणियोंके क्रिया-कलापोंमें एक साम्य दिखाई देता है। विभिन्न योनियोंके मनुष्यमें रूप-रंग एवं स्वभावमें परिवर्तन देखनेमें आता है। लेकिन क्रोमोजोम्सकी संख्या यथावत रहती है। यह परिवर्तन 'जीन्स' में परिवर्तनके कारण संभव है तथापि यह बृहद अनुसंधानका विषय है। पदार्थोंमें प्रोटान तथा इलेक्ट्रानकी संख्या एवं उनके आरबिट्समें स्थितिमें तथा संख्या में परिवर्तन देखा जाता है। मनुष्यमें इलेक्ट्रानके स्थानपर जीन्स मनुष्यकी प्रकृति एवं स्वरूपमें परिवर्तनका कारण सम्भावित है। वैज्ञानिक अनुसंधानोंके अनुसार जीन्सकी संख्या 20,000 से 40,000 बतायी जाती है।

उदाहरण:- हम सभी अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि संतान का स्वरूप और रंग पूर्णत: (शत-प्रतिशत) माता और पिता के जैसा नहीं होता। सभी व्यक्तियों की हस्त रेखायें समान नहीं होतीं। अब वैज्ञानिक भी मानते हैं कि अगूठे के निशान सभी के अलग-अलग होते हैं। संतान के अगूठे के निशान भी माता पिता से भिन्न-भिन्न होते हैं। आँखों की पुतलियाँ भी भिन्न भिन्न होती हैं।

कहने का तात्पर्य है कि जिस प्रकार तत्व की अम्ल या क्षार से क्रिया के बाद उससे प्राप्त पदार्थ का स्वरूप बदल जाता है यद्यपि उसमें तत्व गौंणरूप में यथावत रहते हैं। उसी प्रकार पुरूष के शुक्राणु और स्त्री के अंडाणु के निशेचन के पश्चात् संतान के पैत्रिक स्वरूप में अंतर देखा जाता है, उसकी प्रकृति, उसके स्वभाव, रंग.रूप इत्यादि में परिवर्तन देखा जा सकता है तथापि उसमें क्रोमोंजोम्स की संख्या समान ही रहती है। अर्थात् मूल तत्व समान रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो आत्मा स्वरूप बदल सकती है।

इस तरह एक और तथ्य सामने आता है कि, पदार्थ का इलेक्ट्रोलिसिस करके उसके मूल तत्त्व को पुन: प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार ध्यान, प्राणायाम, धनात्मक चिंतन, योग इत्यादि साधनाओं के द्वारा आत्मा को विकारों से मुक्त करके मूल स्वरूप प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

- **विषय का चयन (Selection of Subject)**

इच्छानुसार संतान अर्थात् गुणवान, सुसंस्कारी, साहसी, शक्तिशाली और धीर-वीर और बुद्धिमान अर्थात् सर्वगुण संपन्न संतान। इसके अलावा परिवार में सुख-शान्ति तथा संतानों के संतुलन हेतु पुत्र एवं पुत्री दोनों चाहिए। इस प्रकार की संतान कैसे मिले ? इस प्रश्न के समाधान हेतु हमें आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार के विज्ञान पर विचार करना आवश्यक है। सर्वप्रथम हम अपने इतिहास पर दृष्टि डालते हैं कि, क्या इतिहास में इच्छानुसार संतान प्राप्त करने के कुछ प्रसंग मिलते हैं इसका उत्तर हाँ है। तो आईए इन प्रसंगों पर विचार करते हैं। इस संबन्ध में तीन महत्वपूर्ण कथायें जानने योग्य हैं।

1. द्रोपदी के स्वयंवर का समाचार तथा धृष्टद्युम्न और द्रौपदी की जन्म कथा।

जनमेजय ने पूछा-भगवान! बकासुर को मारने के बाद पांडवों ने क्या किया ? कृपया वर्णन कीजिए।

वैशम्पायन जी ने कहा- जन्मेजय! बकासुर को मारने के पश्चात् पांडव वेदाध्ययन करते हुए इस ब्राह्मण के घर में निवास करने लगे। कुछ दिनों के बाद उसके यहां एक सदाचारी ब्राह्मण आया। बड़े आदर-सत्कार से उसे स्थान दिया गया। कुंती और पांचो पांडव भी उसकी सेवा-सत्कार में लगे रहे थे। ब्राह्मण ने कथा-प्रसंग में देश, तीर्थ, नदी, नद और राजाओं का वर्णन करते-करते द्रुपद की कथा छेड़ दी तथा द्रोपदी के स्वयंवर की बात भी कहीं। पांडवों ने विस्तार पूर्वक द्रौपदी की जन्म-कथा सुननी चाही, इस पर वह अतिथि ब्राह्मण द्रुपद का पूर्व चरित्र सुनाकर कहने लगा-जब से द्रोणाचार्य ने पांडवों के द्वारा द्रुपद को पराजित करवाया, तब से घड़ी-दो-घड़ी के लिए भी द्रुपद को चैन नहीं मिला। वे चिंतित रहने के कारण दुर्बल पड़ गए। और द्रोणाचार्य से बदला लेने के लिए कर्मसिद्ध ब्राह्मणों की खोज में एक आश्रम से दूसरे आश्रम पर घूमने लगे। वे शोकातुर होकर यही सोचते रहते कि मुझे श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति कैसे हो। किंतु किसी भी प्रकार द्रोणाचार्य के प्रभाव, विनय, शिक्षा और चरित्र को नीचा दिखाने में वे समर्थ न हुए।

राजा द्रुपद गंगातटपर घूमते-घूमते कल्माषी नगरी के पास एक ब्राह्मण-बस्ती में गये। उस बस्ती में ऐसा कोई नहीं था, जो ब्रह्मचर्य का विधिवत् पालन करने वाला अथवा स्नातक न हो। उसमें कश्यप गोत्र के दो ब्राह्मण बड़े ही शान्त, तपस्वी और स्वाध्यायशील थे। उनके नाम थे याज और उपयाज। उन्होंने पहले छोटे भाई उपयाज के पास जाकर सेवा-शुश्रूषा के द्वारा उन्हें प्रसन्न किया और प्रार्थना की कि 'आप कोई ऐसा कर्म कराइये, जिससे मेरे यहाँ द्रोण को मारने वाले पुत्र का जन्म हो; मैं आपको एक अरर्बुद (10 करोड) गायें दूंगा। यही नहीं, आपकी जो इच्छा होगी, उसे में पूर्ण करूंगा।' उपयाज ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता।' द्रुपद ने फिर भी एक वर्ष तक उनकी सेवा की। उपयाज ने कहा, 'राजन! मेरे बड़े भाई याज एक दिन वन में विचर रहे थे। उन्होंने एक ऐसी जमीन पर गिरे हुए फल को उठा लिया, जिसकी शुद्ध-अशुद्धि के संबंध में कुछ पता नहीं था। मैंने उनका यह काम देख लिया और सोचा कि वह किसी वस्तु के ग्रहण करने में शुद्ध-अशुद्धि का विचार नहीं करते। तुम उनके पास जाओ, वे तुम्हारा यज्ञ करा देंगे।' उन्होंने याज की सेवा-शुश्रुषा करके उन्हें प्रसन्न किया और प्रार्थना की कि 'मैं द्रोण से श्रेष्ठ और उनको युद्ध में मारने वाला पुत्र चाहता हूं। याज ने स्वीकार कर लिया।

याज की सम्मति से द्रुपद का यज्ञ कार्य संपन्न हुआ और अग्निकुंड से एक दिव्य कुमार प्रकट हुआ। उसके शरीर का रंग धधकती आग के समान था। सिर पर मुकुट और शरीर पर कवच था। उसके हाथ में धनुष-बाण और खड्ग थे। वह बार-बार गर्जना कर रहा था। अग्निकुंड से निकलते ही वह दिव्य कुमार रथ पर सवार होकर इधर-उधर विचरने लगा। सभी पाञ्चालवासी हर्षित होकर 'साधु-साधु का उद्घोष करने लगे। इसी समय आकाशवाणी हुई-'इस पुत्र के जन्म से द्रुपद का सारा शोक मिट जाएगा। यह कुमार द्रोण को मारने के लिए ही पैदा हुआ है।

उसी वेदी से कुमारी पाञ्चाली का भी जन्म हुआ। वह सर्वांगसुंदरी, कमल के समान विशाल नेत्रोंवाली और श्याम वर्ण की थी। उसके नीले-नीले घुँघराले बाल, लाल-लाल ऊँचे नख, उभरी छाती और टेढ़ी भौहें बड़ी मनोहर थीं। ऐसा जान पड़ता था मानो कोई देवाङ्गना मनुष्य-शरीर धारण करके प्रकट हुई है। उसके शरीर से तुरंत के खिले नील कमल के समान सुंदर गंध निकलकर कोसभरतक फैल रही थी। उस समय वैसी सुंदरी पृथ्वीभर में नहीं थी। उसके जन्म लेने पर भी आकाशवाणी ने कहा-'यह रमणीरत्न कृष्णा है। देवताओं का प्रयोजन सिद्ध करने के लिए क्षत्रियों के संघार के उद्देश्य से इसका जन्म हुआ है। इसके कारण कौरवों को बड़ा भय होगा। यह सुनकर सभी पांचालवासी सिंहों के समान हर्ष ध्वनि करने लगे। इस दिव्य कुमारी और कुमार को देखकर द्रुपदराज की रानी याज के पास आयीं और प्रार्थना करने लगी कि 'ये दोनों मेरे अतिरिक्त और किसी को अपनी माँ न जाने। याज ने राजा की प्रसन्नता के लिए कहा-'एवमस्तु।'

ब्राह्मणों ने इन दिव्य कुमार और कुमारी का नामकरण किया। वे बोले, यह कुमार बड़ा धृष्ट (ढ़ीट) और असहिष्णु है। बल, रूप, धन अथवा कवच-कुण्डल आदि की कांति से संपन्न है। इसकी उत्पत्ति भी अग्नि की द्युति से हुई है। इसलिए इसका नाम होगा 'धृष्टद्युम्न' और यह कुमारी कृष्ण वर्ण की है, इसलिए इसका नाम 'कृष्णा' होगा। यज्ञ समाप्त हो जाने पर द्रोणाचार्य 'धृष्टद्युम्न' को अपने घर ले आये और उसे अस्त्र-शस्त्र की विशिष्ट शिक्षा दी। परम बुद्धिमान् द्रोणाचार्य यह जानते थे कि प्रारब्ध अनुसार जो कुछ होना है, वह तो होकर ही रहेगा। इसलिए उन्होंने अपनी कीर्ति के अनुरूप उस शत्रु को भी अस्त्र-शिक्षा दी, जिसके हाँथों उनका मरना निश्चित था।

इस कहानी के कुछ मत्वपूर्ण और जीवन में धारण करने योग्य तथ्य।

1. राजा द्रुपद का दृढ़ संकल्प आचार्य द्रोण को मारने के लिए समर्थ संतान प्राप्त करना। (अर्थात् संकल्पबद्ध होकर कार्य करना।)
2. द्रोणाचार्य से बदला लेने के लिए कर्मसिद्ध ब्राह्मणों की खोज में एक आश्रम से दूसरे आश्रम पर घूमने लगे।
3. कल्माषी नगरी के पास एक ब्राह्मण-बस्ती में गये। उस बस्ती में ऐसा कोई नहीं था, जो ब्रह्मचर्य का विधिवत् पालन करने वाला अथवा स्नातक न हो। (ब्राह्मण वस्ती अर्थात् सद्चरिवान् वस्ती, जोकि, बर्तमान् समय में दुर्लभ है।)
4. उन्होंने पहले छोटे भाई उपयाज के पास जाकर सेवा-शुश्रूषा के द्वारा उन्हें प्रसन्न किया और प्रार्थना की कि 'आप कोई ऐसा कर्म कराइये, जिससे मेरे यहाँ द्रोण को मारने वाले पुत्र का जन्म हो; मैं आपको एक अरर्बुद (10 करोड) गायें दूंगा। यही नहीं, आपकी जो इच्छा होगी, उसे में पूर्ण करूंगा।' (अर्थात् सफलता पाने के लिए प्राण-पण से प्रतिबद्ध होना।)
5. उपयाज ने कहा, 'मैं ऐसा नहीं कर सकता।' (अर्थात् लोभ मुक्त जीवन।)
6. उपयाज भोजन में शुद्धि-अशुद्धि का पूर्ण ध्यान रखता था इसलिए उसने राजा द्रुपद का कार्य करने से इन्कार कर दिया।
7. उपयाज का बड़ा भाई भोजन की शुद्धि-अशुद्धि पर ध्यान नहीं रखता था। (अर्थात् जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन।)
8. राजा द्रुपद की इच्छा थी कि आचार्य द्रोण को मारनेवाली संतान उत्पन्न हो। कालान्तर में यज्ञतकनीकि से उत्पन्न बालक धृष्टद्युम्न ने ही आचार्य द्रोण को मारने में सफलता प्राप्त की। (अर्थात् तत्कालीन समय में यज्ञतकनीकि से अपनी इच्छानुसार संतान प्राप्त करना संभव था।)
9. राजा द्रुपद कोई छोटे-मोटे राजा नहीं थे तथापि उन्होंने उपयाज और याज की सेवा की। दूसरे शब्दों में कहें तो तत्कालीन युग में मर्यादाओं का पालन होता था। (अर्थात् द्वापरयुग में ऋषि को प्रधानता प्राप्त थी।)
10. विद्वान को सेवा करके प्रसन्न किया जा सकता है जैसे कि राजा द्रुपद ने उपयाज और याज की सेवा करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

2. द्रोणाचार्य का जन्म कैसे हुआ?

जन्मेजय ने पूछा-भगवन्! द्रोणाचार्य का जन्म कैसे हुआ?

(संदर्भ संक्षिप्त महाभारत प्रथम खण्ड आदिपर्व पेज क्रमांक 58}

वैशम्पायन जी ने कहा-जन्मेजय ! पहले युग में गंगाद्वार नामक स्थानपर महर्षि भरद्वाज रहा करते थे। वे बड़े व्रतशील और यशस्वी थे। एक बार वे यज्ञ कर रहे थे। उस दिन सबसे पहले ही वे महर्षियों को साथ लेकर गङ्गास्नान करने गये। वहाँ उन्होंने देखा कि घृताची अप्सरा स्नान करके जल से निकल रही है। उसे देखकर उनके मनमें काम-वासना जाग उठी। जब उनका वीर्य स्खलित होने लगा, तब उन्हों ने उसे द्रोण नामक यज्ञपात्र में रख दिया। उसी में द्रोण का जन्म हुआ।

उपरोक्त कहानी से शिक्षा ग्रहण करने योग्य तथ्य-

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि, स्खलित वीर्य को द्रोण नामक यज्ञपात्र में रखा गया। उसी में उनका जन्म हुआ। अर्थात् घृताची के अण्डे से निशेचन के बगैर सिर्फ शुक्राणु से ही विशेष तकनीकि से द्रोण का जन्म हुआ। अर्थात् उस युग में सिर्फ शुक्राणु से पुत्र प्राप्त किया जा सकता था। यद्यपि वर्तमान समय में यह बात असंभव सी प्रतीत होती है, क्योंकि अभी ऐसी तकनीकि विकसित नहीं है। यह अचरज पहलीबार नहीं हो रहा है। वल्कि ऐसा अनुभव तब भी हुआ था जब हवाईजहाज का आविष्कार नहीं हुआ था लेकिन रामचरित मानस में कुबेर के हवाई यान की चर्चा रामचरितमानस में थी। रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद श्रीराम, माता सीता, लक्षमण जी एवं सहयोगियों के साथ अयोध्या आये थे। नगरवासियों ने अपनी-अपनी अटारियों पर चढ़कर उस यान को देखने का वर्णन भी मिलता है। लेकिन रामचरितमानस के उस प्रसंग को लंबे कालखण्ड तक अविश्वसनीय मानाजाता रहा, उसीप्रकार आज मात्र शुक्राणु से द्रोणाचार्य के जन्म की कथा अविश्वसनीय लग रही है। सिर्फ शुक्राणु से पुत्र उत्पन्न होना संभव है। इसका वर्णन अध्याय क्रमांक 4 में करेगे।

3. **परशुराम की उत्पत्ति** (संदर्भ संक्षिप्त महाभारत वनपर्व पेज 248।)

कान्यकुब्ज (कन्नौज) नामक नगर में गाधि नाम का एक बलवान राजा राज्य करता था। वह वन में जाकर रहने लगा। वहाँ उसके एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जो अपसरा के समान सुन्दरी थी। उसका नाम था सत्यवती। उसके लिए भृगुनन्दन ऋचीक ने राजा के पास जाकर याचना की। राजा गाधि ने ऋचीक मुनि के साथ सत्यवती का ब्याह कर दिया। विवाह कार्य संपन्न हो जानेपर भृगुजी आये और अपने पुत्र को सपत्नीक देखकर बड़े प्रसन्न हुए। तब उन्होंने पुत्रवधु से कहा, 'सौभाग्यवती वधू ! तुम वर माँगो, तुम्हारी जो इच्छा होगी वो मैं दूँगा।' उसने अपने ससुरजी को प्रसन्न देखकर अपने और अपनी माता के लिए पुत्र की याचना की । तब भृगुजी ने कहा, 'तुम और तुम्हारी माता ऋतुस्नान करने के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति की कामना से अलग-अलग वृक्षों का आलिङ्गन करना। वह पीपल का आलिङ्गन करे और तुम गूलर का करना। इसके सिवा मैंने सारे संसार में घूमकर तुम्हारे और तुम्हारी माता के लिये बड़े प्रयत्न से ये दो चरू तैयार किये हैं, इन्हें तुम सावधानी से खा लेना।' ऐसा कहकर मुनि अन्तर्ध्यान हो गये। किंतु उन माँ-वेटी ने चरू भक्षण करने और वृक्षों का आलिङ्गन करने में उलट-फेर कर दिया।

बहुत दिन वीतजानेपर भगवान् भृगु फिर लौटे और उन्होंने दिव्य दृष्टि से सब बात जान ली। तब उन्होंने अपनी पुत्रवधु सत्यवती से कहा, 'वेटी ! चरू और वृक्षों में उलटफेर करके तेरी माता ने तुझे धोखा दिया है। तूने जो चरू खाया है और जिस वृक्ष का आलिङ्गन किया है, उसके प्रभाव से तेरा पुत्र ब्राह्मण होनेपर भी क्षत्रियोंके-से आचरणवाला होगा तथा तेरी माता का पुत्र क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणोंके-से आचरणवाला होगा, बड़ा तेजस्वी और सत्पुरूषों के मार्ग का अनुसरण करनेवाला होगा।'

तब उसने बार-बार प्रार्थना करके अपने ससुरजी को प्रसन्न किया और प्रार्थना की कि मेरा पुत्र ऐसा न हो, भले ही पौत्र ऐसे स्वभाववाला हो जाय। भृगुजी ने 'अच्छा ऐसा ही हो' यह कहकर अपनी पुत्रवधू का अभिनन्दन किया। यथा समय उसके गर्भ से जमदग्नि मुनि का जन्म हुआ। वे बड़े ही तेजस्वी और प्रतापी थे।

महातपस्वी जमदग्नि ने वेदाध्ययन आरम्भ किया और नियमानुसार स्वाध्याय करने से सभी वेदों को कंठस्थ कर लिया। फिर उन्होंने राजा प्रसेनजित् के पास जाकर उनकी पुत्री रेणुका के लिये याचना की और राजा ने उन्हें अपनी वेटी ब्याह दी। रेणुका का आचरण सब प्रकार अपने पतिदेव के अनुकूल था। उसके साथ आश्रम में रहकर वे तपस्या करने लगे। उनके क्रमशः चार पुत्र हुए इसके बाद परशुरामजी का प्रादुर्भाव हुआ, ये पाँचवे थे। भाईयों में छोटे होनेपर भी ये गुणों में सबसे बड़े-चढ़े थे। परशुराम जी ब्राह्मण होकर भी क्षत्रिय स्वभाव के थे जैसाकि भृगुऋषिने पूर्व में ही भविष्यवाणी की थी।

4. चक्रवर्ती राजा दशरथ जी ने भी इच्छानुसार संतान को प्राप्त किया था।

यह एक सौभाग्यपूर्ण संयोग है कि जब मैं चक्रवर्ती राजा दशरथ के पुत्रों के संबन्ध में लिख रहा हूँ तब दिनांक 06.04.2025 को रामजन्मोत्सव का पर्व (रामनवमी) बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है।

एकबार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं।।
गुरू ग्रह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला।।

एकबार राजा के मन में बड़ी ग्लानि हुई कि मेरे पुत्र नहीं है। राजा तुरंत ही गुरू के घर गये और चरणों में प्रणाम कर बहुत विनय की।। 1।।

निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहु बिधि समुझायउ।।
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी।।

राजा ने अपना सारा दुःख-सुख गुरू को सुनाया। गुरू वसिष्ठजी ने उन्हें बहुत प्रकार से समझाया {और कहा-} धीरज धरो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे, जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध और भक्तों के भय को हरनेवाले होंगे।। 2।।

सृगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा।।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें।।

वसिष्ठजी ने श्रङ्गी ऋषि को बुलवाया और उनसे शुभ पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया। मुनि के भक्तिसहित आहुतियाँ **देनेपर अग्निदेव हाँथ में चरू (हविष्यान्न खीर) लिये प्रकट हुए।। 3।।**

जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।।
यह हबि बाँटि देहु नृप् जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई।।

{और दशरथ से बोले-} वसिष्ठ ने हृदय में जो कुछ विचारा था, तुम्हारा वह सब काम सिद्ध हो गया। हे राजन ! {अब} तुम जाकर इस हविष्यान्न (पायस) को, जिसको जैसा उचित हो, वैसा भाग बनाकर बाँट दो।। 4।।

दो.-तब अदृष्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाई।। 189।।

तदन्तर अग्निदेव सारी सभा को समझाकर अन्तर्धान हो गये। राजा परमानन्द में मग्न हो गऐ, उनके ह्रदयमें हर्ष समाता न था ।। 189।।

आगे की कथा में सब को ज्ञात है कि कौसल्या माता के श्रीराम, कैकई के भरत और माता सुमित्रा से और शत्रुध्वन का जन्म हुआ।

छंद-भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।

दीनोंपर दया करनेवाले कौसल्याजी के हितकारी प्रभु प्रकट हुए। मुनियों के मन को हरनेवाले उनके अद्भुत रूपका विचार करके माता हर्ष से भर गयी। नेत्रों को आनंद देनेवाला मेघके समान श्याम शरीर था; चारों भुजाओं में अपने (खास) आयुध {धारण किये हुए} थे; {दिव्य} आभूषण और वनमाला पहने थे; बड़े-बड़े नेत्र थे। इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस को मारनेवाले भगवान प्रकट हुए।।1।।

(संदर्भ तुलसीकृत रामचरितमानस वालकाण्ड, पेज क्रमांक 190 से 192 तक)

धारण करने योग्य तथ्य-

1. गुरू के प्रति सम्मान करना, अहंकार मुक्त व्योहार सीखना हो तो चक्रवर्ती राजा दशरथ जी से सीखना चाहिए। दशरथजी को अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान चाहिए था तो वे स्वयं चलकर गुरूदेव के पास गये और उनके चरण स्पर्शकर प्रणाम किया।
2. गुरू के समक्ष राजा ने अपने सभी दुःख-सुख बिना कुछ छिपाए सुनाए।
3. गुरू हो तो वशिष्ठ जी जैसा। वशिष्ठ जी जानते थे कि राजा दशरथ जी के तीनों लोकों में प्रसिद्ध होनेवाले चार पुत्र होंगे।
4. गुरू वशिष्ठजी ने जेनेटिक्स के विशेषज्ञ ऋङ्गी ऋषि को बुलवाकर पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया।
5. इस प्रकार के यज्ञ से स्पष्ट है कि तत्कालीन समय में पुत्र प्राप्त करने के विज्ञान की जानकारी थी और इस विद्या के विशेषज्ञ भी उपलब्ध थे। वर्तमान समय में वाह्य निशेचन पद्यति तो प्रचलन में है परन्तु पुत्र ही प्राप्त होगा या पुत्री ही प्राप्त होगी इस प्रकार का दावा नहीं किया जा सकता है।
6. श्रङ्गी ऋषि (तत्कालीन वैज्ञानिक) पुत्रकामेष्टि यज्ञ के लिए चरू (हविष्यान्न खीर) तैयार करने में निपुण थे।
7. वर्तमान समय में इस प्रकार के विशेषज्ञों की महती आवश्यकता है।

ऋषिकुमार किंदम के शाप से पाण्डु को वैराग्य

जन्मेजय ने पूछा-भगवन्! मैं पाण्डवों के जन्म की कथा सुनना चाहता हूँ।

वैसम्पायनजी ने कहा-जनमेजय! राजा पाण्डु एक वन में विचर रहे थे। वह हिंस्क पशुओं से पूर्ण और बड़ा भयंकर था। घूमते-घूमते उन्होंने देखा कि एक यूथपति मृग अपनी पत्नी मृगी के साथ मैथुन कर रहा है। पाण्डु ने साधकर पाँच बाण मारे, वे दोनों घायल हो गए। तब मृग ने कहा, राजन्! अत्यन्त कामी, क्रोधी, बुद्धिहीन और पापी मनुष्य भी ऐसा क्रूरकर्म नहीं करते। आपके लिए तो उचित यह है कि पापी और क्रूरकर्मा मनुष्यों को दण्ड दें। मुझ निरपराध को मारकर आपने क्या लाभ उठाया? मैं किंदम नाम का तपस्वी मुनि हूँ। मनुष्य रहकर यह काम करने में मुझे लज्जा मालूम हुई, इसलिए मृग बनकर अपनी मृगी के साथ मैं विहार कर रहा था। मैं प्रायः इसी वेष में घूमता रहता हूँ। मुझे मारने से आपको ब्रह्महत्या तो नहीं लगेगी, क्योंकि आप यह बात जानते नहीं थे। परंतु आपने मुझे जैसी अवस्था में मारा है, वह सर्वथा मारने के अनुपयुक्त थी। इसलिए यदि कभी आप अपनी पत्नी के साथ सहवास करेंगे तो उसी अवस्था में आपकी मृत्यु होगी और वह पत्नी आपके साथ सती हो जायगी।' यह कहकर किंदम ने अपने प्राण छोड़ दिये। इसके बाद पाण्डु ने दुखी होकर संन्यास ले लिया।

पाण्डवों की उत्पत्ति और पाण्डु का परलोक गमन

वैसम्पायनजी कहते हैं-जनमेजय ! अमावश्या तिथि थी। बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि ब्रह्माजी के दर्शन के लिए ब्रह्मलोक की यात्रा कर रहे थे। पाण्डु ने उन लोगों से पूछा, आप कहाँ जा रहे हैं ? और उनका ब्रह्माजी के दर्शनों केलिए ब्रह्मलोक जाने का विचार जानकर अपनी पत्नियों के साथ उनके पीछे चलपड़े। ऋषियों ने कहा, 'राजन् ! मार्ग में बहुत से दुर्गम स्थान हैं। ऐसे दुर्गम मार्ग से राजकुमारी कुन्ती और माद्री कैसे चल सकेंगी ? आप अपनी पत्नियों के साथ यात्रा स्थगित कर दीजिये।' पाण्डु ने कहा-'मैं समझता हूँ कि, सन्तानहीन के लिए स्वर्ग का द्वार बन्द है। यह बात सोचकर मेरा ह्रदय जल रहा है। मनुष्य चार ऋण लेकर जन्म लेता है-पितृ-ऋण, देव-ऋण, ऋषि-ऋण और मनुष्य ऋण। यज्ञ से देवता, स्वाध्याय और तपस्या से ऋषि, पुत्र तथा श्राद्ध से पितर एवं परोपकार से मनुष्य का ऋण उतरता है। मैं और सब ऋणों से तो मुक्त हो गया हूँ, परन्तु पितरों का ऋण मेरे सिरपर है। मुझे यही अभिलाषा है कि मेरी पत्नी के पेट से पुत्रों का जन्म हो।' ऋषियों ने कहा, 'धर्मात्मन! हम दिव्यदृष्टि से देख रहे हैं कि आपके देवताओं के समान पुत्र होंगे। आप अपने इस देवदत्त अधिकार का उपभोग करने के लिए उद्योग कीजिये। आपका मनोरथ सफल होगा।' पाण्डु ऋषियों की बात सुनकर चिंतित हो गए। वे जानते थे कि किंदम ऋषि के शाप के कारण मैं स्त्री-सहवास नहीं कर सकता। अब महर्षिगण वहाँ से चले गये।

एक दिन पाण्डु ने अपनी यशस्वनी पत्नी से कहा, 'प्रिये ! तुम पुत्रोत्पत्ति के लिए प्रयत्न करो।' कुन्ती ने कहा, 'आर्यपुत्र ! जब मैं छोटी थी, तब पिता ने मुझे अतिथियों के स्वागत-सत्कार का काम सौप रखा था। मैंने उस समय दुर्वासा नाम के ऋषि को सेवा से प्रसन्न किया। उन्होंने मुझे एक मंत्र बतलाकर वर दिया कि, 'तुम इस मंत्र से जिस देवता का आवाहन करोगी, वह चाहे अथवा न चाहे तुम्हारे अधीन हो जायगा।' आपकी आज्ञा होनेपर मैं जिस देवता का आवाहन करूँगी, उसी से मुझे संतान होगी। कहिए किस देवता का आवाहन करूँ ?' पाण्डु ने कहा, 'आज तुम विधिपूर्वक धर्मराज का आवाहन करो। वे त्रिलोकी मे श्रेष्ठ पुण्यात्मा हैं। उनसे जो सन्तान होगी, वह निस्सन्देह धार्मिक होगी। उनके द्वारा प्राप्त पुत्र का मन अधर्म की ओर कभी नहीं जायगा।' तब कुन्ती ने धर्मराज का आवाहन किया और उनकी पूजा करके वह मंत्र जपने लगी। तदन्तर योगमूर्ति धर्मराज

के संयोग से कुन्ती को गर्भ रहा और समय आनेपर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके जन्म के समय शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र और अभिजित मुहूर्त था। सूर्य तुला राशि पर था।

कुछ दिनों बाद राजा पाण्डु ने कुन्ती से फिर कहा, 'प्रिये ! क्षत्रिय जाति बल प्रधान है। इसलिए ऐसा पुत्र उत्पन्न करो, जो बलवान हो।' तब पति की आज्ञा पाकर कुन्ती ने वायु का आवाहन किया। महाबली वायुदेव हरिण पर सवार होकर आये। कुन्ती की प्रार्थना से उनके द्वारा भयंकर पराक्रमी एवं अतिशय बलशाली भीमसेन का जन्म हुआ।

अब पाण्डु को यह चिन्ता हुई कि, 'मुझे एक ऐसा पुत्र हो जाता, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ माना जाता। देवताओं में सबसे श्रेष्ठ इन्द्र ही हैं। यदि वे किसी प्रकार संतुष्ट हो जाँय तो मुझे सर्वश्रेष्ठ पुत्र का दान कर सकते हैं। ' ऐसा विचार करके उन्होंने कुन्ती को एकवर्ष तक वृत करने की आज्ञा दी और वे स्वयं सूर्य के सामने एक पैर से खड़े होकर बड़ी एकाग्रता के साथ उग्र तप करने लगे। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर इन्द्र प्रकट हुए और बोले, तुम्हें मैं एक विश्वविख्यात्, ब्राह्मण, गौ और सुहृदों का सेवक तथा शत्रुओं को सन्तप्त करनेवाला श्रेष्ठपुत्र दूँगा।' इसके बाद पाण्डु ने कुन्ती से कहा, 'प्रिये! मैने देवराज इन्द्र से वरदान प्राप्त कर लिया है। अब तुम पुत्र के लिए उनका आवाहन करो।' कुन्ती ने वैसा ही किया। इस प्रकारअर्जुन का जन्म हुआ।

फिर एक दिन माद्री के अनुरोध पर पाण्डु ने कुन्ती से कहा कि यही काम माद्री के गर्भ से सन्तान उत्पन्न करने का करो। कुन्ती ने उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके माद्री से कहा, 'बहिन ! तुम केवल एकबार किसी देवता का चिन्तन करो। उससे तुम्हें अनुरूप पुत्र की प्राप्ति होगी।' माद्री ने अश्वनीकुमारों का चिन्तन किया। उसी समय अश्वनीकुमारों ने आकर नकुल और सहदेव को जुड़वा उत्पन्न किया।

अध्याय क्रमांक 4

तर्क-वितर्क/विवेचन का निष्कर्ष (Findings of Discussions):-

इच्छानुसार संतान अर्थात् सुसंस्कारी, गुणवान, शक्तिशाली, विद्वान, साहसी, धैर्यवान्, अर्थात् सर्वगुण संपन्न संतान प्राप्त करने के लिए प्राकृतिक नियमों, मार्डन विज्ञान एवं सनातन ऋषियों के अनुसंधानों के पदचिन्होंपर चलते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। अध्याय क्रमांक 3 में वर्णित किये गये अनुसंधानों से नवनीत प्राप्त करने हेतु मंथन करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करते हैं।

तालिका क्रमांक 01				
आत्मा				
1	2	3	4	5
क्रमांक	आध्यात्मिक दृष्टिकोण	वैज्ञानिक दृष्टिकोण	संदर्भ	
1	**"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नयं भूत्वा भविता व न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।"** ⁜ *(संदर्भः श्रीमद्भगवदगीता अध्याय 2/20)* यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है अथवा न यह आत्मा होकर के फिर होनेवाला है; क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, शरीर के नाश होने पर भी यह नाश नहीं होता। **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोष्यति मारूतः।।23।।**⁜ हे अर्जुन! इस आत्मा को शस्त्रादि काट नहीं सकते हैं और इसको आग नहीं जला सकती और इसको जल गीला नहीं कर सकता है। *(संदर्भः श्रीमद्भगवदगीता अध्याय 2, श्लोक 23)* **अच्छेद्योऽयमदाह्योऽक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।24।।**⁜ क्योंकि यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य और अशोष्य है तथा यह आत्मा निःसन्देह नित्य, सर्वव्यापक, अचल, स्थिर रहने वाला और सनातन है। **"आत्मा में कुछ व्याप्त नहीं होता।" अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।।25।।**⁜ यह आत्मा अव्यक्त अर्थात् इन्द्रियों का अविषय और यह आत्मा अचिन्त्य अर्थात् मन का अविषय और यह आत्मा विकार रहित अर्थात् न बदलने वाला कहा गया है, इससे हे अर्जुन! इस आत्मा को ऐसा जानकर तूँ	**<u>आत्मा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण:-</u>** विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से यह निष्कर्ष सामने आया कि प्रांणियों में जेनिटिकल गुण, जीन्स के द्वारा, एक सन्तति से दूसरी संतति में अन्तरण (transmit) होता है। जीन्स को वैज्ञानिक मैन्डिल ने नित्य (Perpetuating body) कहा गया है। उपरोक्त अध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक मतानुसार जीन्स को नित्य कहा गया है अर्थात् शरीर के नष्ट होने पर भी आत्मा नष्ट नहीं होती। प्रसिद्ध जीव विज्ञानी मैन्डिल (MENDLE) ने जेनिटिक्स पर महत्व पूर्ण प्रयोग किये। ग्रिगर जान मैन्डिल (GREGOR JOHANN MENDLE) ने आनुवांशिकता के आधारभूत सिद्धान्त को 1965 में सूत्रबद्ध किया। यद्यपि मैन्डिल ब्रून मठ के मठ वासी (monk in the monastery of BRUNN) थे। उन्होंने अपने मठ के बगीचे के अन्दर मटर पर 1857 से 1865 के मध्य प्रसिद्ध प्रयोग किये। लेकिन दुर्भाग्यवश उनके प्रयोग 35 वर्षो तक अनजान रहे। इसके बाद 1900 में तीन विभिन्न व्यक्तियों ने अपने-अपने प्रयोगों से उसी निष्कर्ष पर पहुँचे जिन पर मैन्डिल पहुँचे थे। ये तीन व्यक्ति हूगो डी वेरीज होलैन्ड में, कार्ल कोरेन्स जर्मनी में एवं इरिक	*(संदर्भः प्लान्ट इकालाजी, जेनेटिक्स और इवोल्यूशन पी.एल. कोचर पेज 116 एडीशन 1969)*	

	शोक करने योग्य नहीं है अर्थात् तुझे शोक करना उचित नहीं है।25।॥ *(संदर्भः श्रीमद्भगवदगीता अध्याय 2, श्लोक 25)*	वान शेचरमाक आस्ट्रिया में कार्य कर रहे थे। इन तीनों के शोध प्रकाश में आने पर ज्ञात हुआ कि यह शोध पूर्व में आस्ट्रियन मठ वासी द्वारा किये जा चुके हैं। अतः इन तीन व्यक्तियों के कार्य में सिद्ध हुआ कि मैन्डिल के सिद्धान्त सिर्फ बगीचे की मटर पर ही लागू नहीं होते वल्कि अन्य पौधे और प्रांणियों पर भी लागू होते हैं।		
	निष्कर्ष आत्मा नित्य है।			

तालिका क्रमांक 02			
पदार्थ और प्राणियों की प्रक्रियाओं में साम्य।			
क्रमांक	विषय	प्रक्रिया	
1	2	3	4
1	धातुएँ अम्ल और क्षार से क्रिया करके अलग-अलग प्रकारके स्वरूपको धारण करते हैं तथा विश्लेषण करनेपर पुनः मूल स्वरूप धारण कर सकते हैं।	कापर, सल्फ्यूरिक अम्लके साथ क्रिया करके कापर सल्फेट के रूपमें सामने आता है। उल्लेखनीय है कि कापर एक धातु है जबकि कापरसल्फेट धातु नहीं है; एक प्रकारका लवण है। सल्फ्यूरिक अम्ल एक यौगिक है जो कि विच्छेदित होता है कापरके साथ अपना सल्फेट जोड़ता है तथा हाइड्रोजन मुक्त हो जाती है।	$Cu + H_2SO_4 = CuSO_4 + H_2$
2	**अवकारक गुण (Reducing properties)** हाइड्रोजन विद्युत-धनात्मक (electro-positive) होनेके कारण विद्युत-ऋणात्मक (electro-negative) तत्त्वोंसे सुगमतासे संयोग कर लेती है और इसप्रकार अवकारक का कार्य करती है।	उदाहरणार्थ यह बहुत-सी धातुई आक्साइडोंको धातुओंमें (जैसे Cu और Fe के आक्साइडोंको अवकृत करती है। अधिक विद्युत-धनात्मक धातुओं जैसे क्षार धातु, क्षारीय पार्थिव धातु (alkaline earth metals), जिंक और अल्युमिनियमके आक्साइडोंको अवकृत नहीं करती।	$Cu_2O + H_2 = Cu_2 + H_2O$ $^2FeO_2 + ^4H_2 = ^2Fe + ^4H_2O$ यहाँ उल्लेखनीय है कि कापर आक्साइड और फेरस आक्साइड में क्रमशः कापर और आयरन तत्त्व उपलब्ध हैं जो अवकृत होकर पुनः मूल तत्त्वके रूपमें आ जाते हैं।
इससे स्पष्ट है कि तत्त्व नष्ट नहीं होते अर्थात् तत्त्व अविनाशी है। इसी प्रकार आत्मा भी अविनाशी है।			
निष्कर्षत: तत्त्व और आत्मा अविनाशी हैं अर्थात तत्त्व और आत्मा में साम्य है।			

आकर्षण का सिद्धान्तः-

आकर्षण का सिद्धान्त, ब्रह्माण्ड, भौतिक तत्त्वों, परमाणुओं, प्राणियों एवं कोशिकाओं पर, समानरूपसे प्रभावी है।

तालिका क्रमांक 03	**आकर्षण का सिद्धान्त समानरूपसे प्रभावी है।**		
1	2	3	4
क्रमांक	**विषय**	**आकर्षण का प्रभाव**	
1	ब्रह्माण्ड पर आकर्षण का प्रभाव	सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, इत्यादि ग्रह एवं उपग्रह सभी एक दूसरे के आकर्षण से क्रियाशील हैं।	चित्र देखें पेज 32
2	भौतिक तत्त्वों पर आकर्षण का प्रभाव	मिट्टी के कण आकर्षण के कारण जुड़कर ईंट, पत्थर बनते हैं। धातुओं के अणु आकर्षण के कारण गलाने पर जुड़ जाते हैं। इसी प्रकार लवण के अणु आकर्षण के कारण संगठित हो जाते हैं। तथा इसी प्रकार गैस के परमाणु आकर्षण के कारण जुड़कर अणु बनाते हैं।	चित्र देखें पेज 33
3	परमाणुओं पर आकर्षण का प्रभाव	परमाणु संरचना को देखें तो सभी इलैक्ट्रान् अपनी-अपनी कक्षा में रहते हुए आकर्षण के कारण न्यूक्लियस की परिक्रमा करते रहते हैं।	
4	कोशिकाओं पर आकर्षण का प्रभाव	कोशिका संरचना को देखें तो न्यूक्लियस के सभी अवयव सुनिशिचित आकारमें निर्धारित स्थान पर	

		रहते हैं। वायु के अणु वायुसेक में रहते है, इसी प्रकार फूडवेकुओल्स सभी अपने-अपने अणुओं में आकर्षण के कारण सुनिश्चित आकार में देखे जाते हैं।	
5	प्राणियों पर आकर्षण का प्रभाव	हम सभी जानते हैं कि पुरूष और स्त्री के मध्य आकर्षण होता है। इस आकर्षण के कारण परिवार संगठित रहता है।	चित्र देखें पेज 33
6	शुक्राणुओं में अण्डाणु के प्रति आकर्षण होता है	शुक्राणुओं में अण्डाणु के प्रति आकर्षण होता है इसलिए वीर्य में उपस्थित शुक्राणु अपने सिलिया के द्वारा चलकर अण्डाणु के पास जाकर उसमें प्रवेश करता है। और निशेचन क्रिया संपन्न करता है।	चित्र देखें पेज 32
7	लोहे के अणुओं में आकर्षण और विकर्षण।	लोहे के अणुओं में दो ध्रुव क्रमश: ऋण एवं धन होते हैं। ऋण और धन ध्रुवों में आकर्षण होता है। इसी विशेषता के आधार पर चुम्बक बनाए जाते हैं। दूसरी ओर ऋण और ऋण ध्रुव के मध्य विकर्षण होता है। इसी प्रकार धन ओर धन ध्रुवों के मध्य विकर्षण होता है।	चित्र देखें पेज 33
8	चुम्बक की सुई पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव की ओर आकर्षित होती है।	पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव आकर्षण का ज्वलन्त प्रमाण है।	
निष्कर्षत: आकर्षण का प्रभाव पंच तत्त्वों, धातुओं एवं प्राणियों पर समान रूपसे पड़ता है।			

तालिका क्रमांक 04

भौतिक तत्त्व और आत्म तत्त्व में साम्य है।

क्रमांक	भौतिक तत्त्व	आत्म तत्त्व
1	2	3
1	भौतिक तत्त्व नष्ट नहीं होते, सिर्फ रूप बदलते हैं।	आत्म तत्त्व अविनाशी हैं, सिर्फ प्रकृति बदलते हैं।
2	भौतिक तत्त्व अम्ल, क्षार से क्रिया करके रूप बदलते हैं।	आत्म तत्त्व लोभ, मोह, अहंकार इत्यादि दोषों के साथ युग्म होने पर प्रकृति बदलते हैं।
3	भौतिक तत्वों की अम्ल, क्षार इत्यादि से रासायनिक क्रियासे यौगिक बनते है।	आध्यात्मिक तत्वोंके साथ विकार जुड़ जाने से उस व्यक्तिका स्वभाव बदल जाता है।
4	भौतिक तत्वोंके यौगिकके साथ पुनः रासायनिक क्रिया करवाने से मूल तत्व को अलग किया जा सकता है।	विकारोंसे युक्त पुरूषको सत्संग, सतोगुणी तत्वोंके योगसे विकार मुक्त करके आत्माको शुद्ध किया जा सकता है। जिसे आध्यात्मिक भाषामें "मोक्ष" कहते हैं।
निष्कर्षत: भौतिक तत्त्व और आत्म तत्त्व में साम्य है।		

2. **संयोजकताका इलेक्ट्रानिक सिद्धान्तः-**

परमाणु-रचना सम्बन्धी ज्ञानने हमें परमाणुकी केवल आन्तरिक रचनाके सम्बन्धमें जानकारी नहीं दी बल्कि परमाणुओंके परस्पर संयुक्त होनेके समुचित कारणोंका भी बोध कराया है। परमाणुओंकी रासायनिक क्रियाएं उनके सबसे बाहरी चक्रके इलेक्ट्रानोंकी संख्या पर निर्भर करती है। इन इलेक्ट्रानोंको संयोज्य-इलेक्ट्रान (valency electrons) कहते हैं।

निष्क्रिय गैसों (inert gases) के सबसे बाहरी चक्रमें 8 इलेक्ट्रान होते हैं (हीलियममें 2 ही इलेक्ट्रान होते हैं क्योंकि इसमें इलेक्ट्रानोंकी कुल संख्या 2 होती है।) ये गैसें दूसरे तत्त्वोंसे क्रिया नहीं करती हैं। इसका कारण यह है कि इनके अन्तिम चक्र पूर्ण होते हैं। अतः इनकी अवस्था आदर्श स्थाई मानी जाती है।

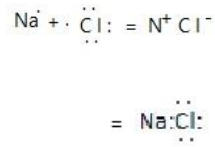
निष्क्रिय गैसोंके अतिरिक्त अन्य तत्त्वोंमें अन्तिम चक्र अपूर्ण होते हैं और वे इलेक्ट्रान त्यागकर या ग्रहण करके आदर्श स्थाईरूपमें परिवर्तित हो जाने, अर्थात् अपनी परमाणु-रचनाको निकटतम निष्क्रिय गैसकी भाँति बना देनेकी प्रवृति रखते हैं। इस प्रवृतिके फलस्वरूप किसी तत्त्वका

परमाणु जितने इलेक्ट्रान त्यागता अथवा ग्रहण करता है, वह उस तत्त्वकी संयोजकता कहलाती है। इलेक्ट्रानोंके इस प्रकार हुए प्रबन्धोंको परमाणु-बन्धन (atomic linkage) कहते हैं।

निम्न तालिका में तत्त्वों के एटोमिक लिंकेज एवं मनुष्य निषेचन के परिणामों से तुलना करते है।

तालिका क्रमांक 05

तत्त्वों के एटोमिक लिंकेज एवं मनुष्य निषेचन के परिणामों से तुलना

क्रमांक	तत्त्वों के एटोमिक लिंकेज	रासायनिक सूत्र	मनुष्य निषेचन के परिणाम	
1	2	3	4	5
1	निष्क्रिय गैसों (inert gases) के सबसे बाहरी चक्रमें 8 इलेक्ट्रान होते हैं (हीलियममें 2 ही इलेक्ट्रान होते हैं क्योंकि इसमें इलेक्ट्रानोंकी कुल संख्या 2 होती है।) ये गैसें दूसरे तत्त्वोंसे क्रिया नहीं करती हैं। इसका कारण यह है कि इनके अन्तिम चक्र पूर्ण होते हैं। अतः इनकी अवस्था आदर्श स्थाई मानी जाती है।	H_e 2 - - - N_e 2, 8 --	1. निष्क्रिय गैसोंकी तरह जो या तो प्रजनन क्रिया करने हेतु सक्षम नहीं होते जिन्हें खसुआ कहा जाता है या वे सन्तति पैदा करनेके लिये सक्षम नहीं होते जैसे कि सन्तान हीन दंपत्ति।	
2	निष्क्रिय गैसोंके अतिरिक्त अन्य तत्त्वोंमें अन्तिम चक्र अपूर्ण होते हैं और वे इलेक्ट्रान त्यागकर या ग्रहण करके आदर्श स्थाईरूपमें परिवर्तित हो जाने, अर्थात् अपनी परमाणु-रचनाको निकटतम निष्क्रिय गैसकी भाँति बना देनेकी प्रवृति रखते हैं। इस प्रवृतिके फलस्वरूप किसी तत्त्वका परमाणु जितने इलेक्ट्रान त्यागता अथवा ग्रहण करता है, वह उस तत्त्वकी संयोजकता कहलाती है। इलेक्ट्रानोंके इस प्रकार हुए प्रबन्धोंको परमाणु-बन्धन (atomic linkage) कहते हैं। ये निम्न तीन प्रकारके होते हैं-			
	1. क. **विद्युत-बन्धन** (Electrovalent linkage) यह संयेजकता इलैक्ट्रोनों के स्थानान्तरण से उत्पन्न होती है। इसमें एक परमाणु सदैव के लिए अपनी बाहरी कक्षा के इलैक्ट्रोनों को स्वेछा से दे देता है और दूसरा उन्हें ग्रहण कर लेता है। ऐसा तभी करते हैं जब इस आदान-प्रदान से दोनों परमाणुओं का स्थिर विन्यास (अर्थात् 8 इलैक्ट्रान हो जाना) हो जाता है। उदाहरणार्थ-सोडियम और क्लोरीनके संयोगसे सोडियम क्लोराइडका बनना-सोडियमकी परमाणु-रचना (2,8,1) होती है अर्थात् उसके बाहरी चक्रमें एक इलेक्ट्रान होता है।		वे दंपत्ति जिनके सिर्फ लड़कियाँ ही लड़कियाँ जन्म लेतीं हैं। इस प्रकार के विद्युत-बंधन (Electrovalent linkage) कहलाते हैं। क्योंकि निोचन प्रक्रिया के दौरान शुक्राण से एक्स (X) को ग्रहण कर दो एक्स (XX) ZYGOTE बनता है। यहाँ X ऋण संयोजकता कही जायगी।	
	2. **ख. सह-संयोजकीय बन्धन (covalent linkage)** इस बन्धनमें तत्त्वोंके परमाणु स्थायी अवस्था प्राप्त करनेके लिये आपसमें इलेक्ट्रानोंका ऐसा साझा करते हैं जिससे दोनोंके स्थायी अवस्था प्राप्त करनेमें सहायता मिलती है। जो इलेक्ट्रान साझेके होते हैं उनमेंसे आधे एक तत्त्व और आधे दूसरा तत्त्व देता है और इन सबपर दोनोंका बराबर अधिकार होता है। इस बन्धन द्वारा बने हुए यौगिक सह-संयोजकीय यौगिक (covalent compound) कहलाते हैं और इनमें प्रदर्शित हुई संयोजकताको सह-संयोजकता (covalence) कहते हैं। सह-संयोजकीय बन्धन, विद्युत-	उदाहरणः आक्सीजनके अणुका बनना. आक्सीजनका अणु दो परमाणुओंके मध्य इलेक्ट्रानोंके दो जोड़के साझेसे बनता है। 	वे जिन दंपत्तियोंके सिर्फ लड़के सन्तानके रूपमें जन्म लेते हैं। इसे दाता-बन्धन परमाणुओंमें से दूसरेकेरूपमें देखा जा सकता है जो अपने इलेक्ट्रानोंको न देकर इस जोड़ीको ले लेता है।	

	बन्धनकी अपेक्षा काफी मजबूत होता है और इसी कारण सह-संयोजकीय यौगिक साधारणतया आयनीकृत नहीं होते। अधिकांश कार्बनिक यौगिक सह-संयोजकीय होते हैं।			
	3. **दाता-बन्धन (Co-ordinate linkage):-** यह भी एक प्रकारका सह-संयोजकीय बन्धन होता है; अन्तर केवल इतना ही है कि सह-संयोजकीय बन्धनमें युक्त परमाणु इलेक्टानोंके साझेमें बराबर हिस्सा लेते हैं अर्थात् जितने इलेक्ट्रान एक परमाणु साझे के लिये देता है उतने ही दूसरा, जबकि दाता-बन्धनमें युक्त होनवाले परमाणुओंमेंसे एक तो इलेक्ट्रानोंकी जोड़ी देता है परन्तु दूसरा अपने इलेक्ट्रानोंको न देकर इस जोड़ीको ले लेता है, उसे स्वीकर्ता कहते हैं।		वे दंपत्ति जिनके लड़के एवं लड़कियाँ दोनों प्रकारकी सन्ताने जन्म लेती हैं। इसे सह-संयोजकीय बन्धनकी तरह देखा जा सकता है। जो इलेक्ट्रान साझेके होते हैं उनमेंसे आधे एक तत्त्व और आधे दूसरा तत्त्व देता है और इन सबपर दोनोंका बराबर अधिकार होता है। इस बन्धन द्वारा बने हुए यौगिक सह-संयोजकीय यौगिक दाता-बन्धन (Co-ordinate linkage) कहलाते हैं।	
	निष्कर्षत उपरोक्त तालिका में वर्णित अभिलेख से स्पष्ट है कि पदार्थ के लिंकेज और मनुष्य में निषेचन (The term fertilization denotes the sexual union of two gametes] regardless of their relative structure, behavior and the nature.) के परिणामों में साम्य है।			

आधुनिक आर्वत नियम और परमाणु संरचना के अनुसार आर्वत सारिणी के प्रत्येक समूह में परमाणु संरचना की समानता की विशेषता पायी जाती है। सातवाँ समूह हेलोजन परिवार कहलाता है। इसके सारे तत्व क्रियाशील अधातु हैं। इसमें बाहरी कक्षा में 7 इलैक्ट्रान होते हैं। उल्लेखनीय है कि क्लोरीन (Cl) इसी समूह में आता है। क्लोरीन (Cl) ऋण (-) आयन है। इसको धन आयन में बदलना आवश्यक है। लेकिन इसके अंतिम आरबिट में सात इलैक्ट्रान् होने के कारण यह दूसरे तत्व से आयन शीध्रता से ग्रहण करलेता है। इस प्रकार ऋण आयन की भूमिका निर्वाह करता है।

अब प्रश्न उठता है कि उपरोक्त उदाहरण एवं नियमों को दृष्टि में रखतेहुए प्रतीत होता है कि अपनी इच्छा के अनुसार संतान प्राप्त करना संभव नहीं हैं। लेकिन अध्याय क्रमांक 3 में वर्णित एतिहासिक कथाओं से अपनी इच्छाके अनुसार धर्मात्मा, शक्तिशाली, बुद्धिमान एवं सर्वगुणों से युक्त संतान प्राप्त की गईं हैं। अत: पुर्नविचार करते हैं।

तालिका क्रमांक 06				
इच्छानुसार संतान प्राप्त करने के आश्चर्यजनक एतिहासिक प्रयोग				
क्रमांक	विषय	श्रेष्ठ संतान हेतु प्रयोग की विधि	संदर्भ	अन्य
1	2	3	4	5
1	धृष्टद्युम्न और द्रौपदी की जन्म कथा।	याज की सम्मति से द्रुपद का यज्ञ कार्य संपन्न हुआ और अग्निकुंड से एक दिव्य कुमार प्रकट हुआ। उसके शरीर का रंग धधकती आग के समान था। सिर पर मुकुट और शरीर पर कवच था। उसके हाथ में धनुष-बाण और खड्ग थे। वह बार-बार गर्जना कर रहा था। अग्निकुंड से निकलते ही वह दिव्य कुमार रथ पर सवार होकर इधर-उधर विचरने लगा। सभी पाञ्चालवासी हर्षित होकर 'साधु-साधु का उद्घोष करने लगे। इसी समय आकाशवाणी हुई-'इस पुत्र के जन्म से द्रुपद का सारा शोक मिट जाएगा। यह कुमार द्रोण को मारने के लिए ही पैदा हुआ है। उसी वेदी से कुमारी पाञ्चाली का भी जन्म हुआ।	(संदर्भ संक्षिप्त महाभारत प्रथम खण्ड आदिपर्व	
2	द्रोणाचार्य का जन्म कैसे हुआ ?	वैशम्पायन जी ने कहा-जन्मेजय ! पहले युग में गंगाद्वार नामक स्थानपर महर्षि भरद्वाज रहा करते थे। वे बड़े व्रतशील और यशस्वी थे। एक बार वे यज्ञ कर रहे थे। उस दिन सबसे पहले ही वे महर्षियों को साथ लेकर गङ्गास्नान करने गये। वहाँ उन्होंने देखा कि घृताची अप्सरा स्नान करके जल से निकल रही है। उसे देखकर उनके मनमें काम-वासना जाग उठी। जब उनका वीर्य स्खलित होने	(संदर्भ संक्षिप्त महाभारत प्रथम खण्ड आदिपर्व पेज क्रमांक 58}	

		लगा, तब उन्होंने उसे द्रोण नामक यज्ञपात्र में रख दिया। उसी में द्रोण का जन्म हुआ।		
3	परशुराम की उत्पत्ति	राजा गाधि की पुत्री सत्यवती का विवाह भृगुनंदन ऋचीक से हुआ। बधु सत्यवती ने अपने ससुर भगवान भृगु से अपने लिए एवं माता के लिए पुत्र का आशीर्वाद माँगा। तब भृगुजी ने कहा, 'तुम और तुम्हारी माता ऋतुस्नान करने के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति की कामना से अलग-अलग वृक्षों का आलिङ्गन करना। वह पीपल का आलिङ्गन करे और तुम गूलर का करना। इसके सिवा मैंने सारे संसार में घूमकर तुम्हारे और तुम्हारी माता के लिये बड़े प्रयत्न से ये दो चरू तैयार किये हैं, इन्हें तुम सावधानी से खा लेना।' ऐसा कहकर मुनि अंतर्ध्यान हो गये। किंतु उन माँ-वेटी ने चरू भक्षण करने और वृक्षों का आलिङ्गन करने में उलट-फेर कर दिया। बहुत दिन वीतजानेपर भगवान् भृगु फिर लौटे और उन्होंने दिव्य दृष्टि से सब बात जान ली। तब उन्होंने अपनी पुत्रवधु सत्यवती से कहा, 'वेटी ! चरू और वृक्षों में उलटफेर करके तेरी माता ने तुझे धोखा दिया है। तूने जो चरू खाया है और जिस वृक्ष का आलिङ्गन किया है, उसके प्रभाव से तेरा पुत्र ब्राह्मण होनेपर भी क्षत्रियोंके-से आचरणवाला होगा तथा तेरी माता का पुत्र क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणोंके-से आचरणवाला होगा, बड़ा तेजस्वी और सत्पुरूषों के मार्ग का अनुसरण करनेवाला होगा।' तब उसने बार-बार प्रार्थना करके अपने ससुरजी को प्रसन्न किया और प्रार्थना की कि मेरा पुत्र ऐसा न हो, भले ही पौत्र ऐसे स्वभाववाला हो जाय। भृगुजी ने 'अच्छा ऐसा ही हो' यह कहकर अपनी पुत्रवधू का अभिनन्दन किया। यथा समय उसके गर्भ से जमदग्नि मुनि का जन्म हुआ। वे बड़े ही तेजस्वी और प्रतापी थे। महातपस्वी जमदग्नि ने वेदाध्ययन आरम्भ किया और नियमानुसार स्वाध्याय करने से सभी वेदों को कंठस्थ कर लिया। फिर उन्होंने राजा प्रसेनजित् के पास जाकर उनकी पुत्री रेणुका के लिये याचना की और राजा ने उन्हें अपनी वेटी ब्याह दी। रेणुका का आचरण सब प्रकार अपने पतिदेव के अनुकूल था। उसके साथ आश्रम में रहकर वे तपस्या करने लगे। उनके क्रमशः चार पुत्र हुए इसके बाद परशुरामजी का प्रादुर्भाव हुआ, ये पाँचवे थे। भाईयों में छोटे होनेपर भी ये गुणों में सबसे बड़े-चढ़े थे।	(संदर्भ संक्षिप्त महाभारत वनपर्व पेज 248।)	
4	चक्रवर्ती राजा दशरथ जी ने भी इच्छानुसार संतान को प्राप्त किया था।	श्रङ्गी ऋषि ने पुत्रेष्ठि यज्ञ कराया। यज्ञ से अग्निदेव हाँथ में चरू हविष्यान्न खीर लिए प्रकट हुए। उस चरू को तीनों रानियों माता कौसिल्या माता कैकई, और माता सुमित्रा को बिधिवत खिलाया उनसे क्रमश: श्रीराम, श्री भरतजी, लक्षमणजी और शत्रुध्वन का जन्म हुआ।	(संदर्भ तुलसीकृत रामचरितमानस वालकाण्ड, पेज क्रमांक 190 से 192 तक)	
5	पाण्डवों की उत्पत्ति	राजा पाण्डु को श्रंगी ऋषि का अभिषाप था कि तुम जब अपनी पत्नी से सहवास करोगे तब तुम्हारी मृत्यु हो जावेगी और तुम्हारी पत्नी सती हो जावेगी। अत: एकवार राजा पाण्डु ने अपनी यशश्वनी पत्नी से कहा, कि तुम पुत्रोत्पत्ति के लिए प्रयत्न करो। तब कुन्ती ने कहा आर्यपुत्र ! जब मैं छोटी थी तब मुझे ऋषियों के सत्कार का कार्य सौंपा गया था। उस समय दुर्वासा ऋषि ने सेवा से प्रसन्न होकर मंत्र दिया था कि तुम इस मंत्र से जिस देवता का आवाहन करोगी वह चाहे या न चाहे वह तुम्हारे वश में होगा। आपकी आज्ञा होनेपर मैं जिस देवता का आवाहन करूँगी उसी से संतान होगी।	संक्षिप्त महाभारत प्रथम खण्ड	

		राजा पाण्डु की आज्ञा से कुंती ने पहले धर्मराज का आवाहन किया उनसे युधिष्ठर का जन्म हुआ। कुछ समय बाद कुंती ने वायुदेव का आवाहन किया उनसे महा बलशाली भीमसेन का जन्म हुआ। इसके बाद श्रेष्ठ देवता इन्द्र का आवाहन किया उनसे अर्जुन का जन्म हुआ। इसके बाद माद्री के अनुरोधपर राजा पाण्डु ने कुंती से वही कार्य माद्री के लिए करने को कहा, कुंती ने माद्री से कहा, वहिन किसी देवता का स्मारण करो उसी से पुत्र होगा। माद्री ने अश्वनीकुमारों का स्मरण किया, उनसे नकुल और सहदेव को जुड़वा उत्पन्न किया।		
उपरोक्त तालिका क्रमांक 06 के बिन्दु क्रमाक 1 से 6 में वर्णित कथाओं का सारांश है कि,धृष्टद्युम्न और द्रौपदी का जन्म यज्ञ कार्य से संपन्न हुआ। द्रोणाचार्य का जन्म द्रोण नामक यज्ञपात्र में शुक्राणुओं को रखकर वैज्ञानिक बिधि से हुआ, परशुराम की उत्पत्ति 'चरू' अर्थात् विशिष्ट बिधि से तैयार औषयिों के प्रयोग से हुआ, इसी प्रकार भगवान श्रीराम, श्री भरतजी, श्री लक्षमणजी और शत्रुध्वन का जन्म चरू के प्रयोग से हुआ और पाण्डवों की उत्पत्ति दुर्वासा ऋषि द्वारा कुन्ती को दिये मंत्रों से विशिष्ट देवताओं के आवाहन से हुआ।				

एतिहासिक शास्त्रों में उपलब्ध उपरोक्त वैज्ञानिक प्रयोग आश्चर्यजनक एवं अतिमहत्वपूर्ण हैं। इतना ही नहीं वल्कि मनुष्य की इच्छाओं को पूर्ण करने की दिशा में नीव के पत्थर हैं। परन्तु वर्तमान समय में यह अध्यात्मिक विज्ञान लुप्तप्राय हो गया है। इसलिए इस दिशा में पुन: कार्य किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान समय में भौतिक विज्ञान के द्वारा टेस्ट्यूव वेवी का महत्वपूर्ण आविष्कार हुआ है लेकिन उसके द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार, धर्मराज की तरह धार्मिक युधिष्ठर, भीमसेन की तरह बलवान योद्धा, अर्जुन की तरह धनुर्धर तथा नकुल और सहदेव की तरह सहयेगी व्यक्तित्व के धनी संतान उत्पत्ति की कल्पना करना भी दूभर है।

व्यक्तित्व की धनी संतान पाने की बात आती है तो भारत में जन्मे अमेरिकी वैज्ञानिक और नोबुल पुरूष्कार विजेता डा. खुराना की याद आती है, उन्होंने जीन्स पर कार्य किया था और कल्पना की थी कि जीन्स सर्जरी के द्वारा हम अपनी इच्छा के अनुसार लेखक, कवि, वैज्ञानिक या इसी प्रकार अपनी इच्छा के अनुसार गुणवान व्यक्ति प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि उनकी यह कल्पना अभी तक साकार नहीं हो सकी है।

लेकिन यदि यह सर्जरी साकार हो भी जाय तो इसकी पहुँच आम आदमी तक पहुँचना संभव नहीं है। जबकि आध्यात्मिक विद्या का आर्थिक अथवा गरीब होने से कोई संबन्ध नहीं है। प्राचीन भारतीय ऋषि जंगलों में रहकर आश्चर्यजनक शोध कार्य करने में समर्थ हुए हैं। तत्कालीन व्यवस्था में गुरूकुल शिक्षा के केन्द्र थे। इन गुरूकुलों की व्यवस्था जनता के द्वारा चलती थी। गुरूकुल के शिष्य गाँव में भिक्षाटन के लिए जाते थे। इसलिए ग्रामीण उनको पोषित करना अपना दायित्व समझते थे। दूसरीओर गुरूकुल के शिष्य जनता के संपर्क में रहकर उनकी परिस्थितियों की पूर्ण जानकारी रखते थे। इस प्रकार "वशुधैवकुटुम्बकम" की भावना का बीजारेपण किया जाता था। वर्तमान समय में यह कल्पना करना भी दूभर है, चारोंओंर स्वार्थ पूर्ण करने का ताना-वाना दिखाई देता है।

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने भविष्यवाणी की है कि यह समय युगपरिर्वतन का है सतयुग आयेगा। युगसंधि की वेला चल रही है। वर्तमान परिस्थितियोंपर पारखी नजर से देखें तो यह समय वैसा ही है जैसे माली अपने बगीचे को जब सजाना चाहता है तब पेड़-पौधों की काट-छांट करता है। खर-पतवार साफ करता है। वैसा ही दृष्य चारोंओर दिखाई पड़ रहा है। रूष-युक्रेन का युद्ध, इजराइल गाजा के बीच युद्ध, ईरान, अमेरिका की नोक-झोंक। इसके अलावा अनेक देशों में आन्तरिक उठा-पठक, भारत भी अछूता नहीं है, यहाँ पाकिस्तान बार्डर से आतंकवादी वर्षों से लगातार प्रहार कर रहे हैं। इतना ही नहीं वल्कि प्रकृति भी अपना तांडव नृत्य दिखारही है। भूकंप, ज्वलामुखी, आँधी-तूफान से चारोंओर हल-चल मची हुई है। प्रकृति का तांडव भी युग परिवर्तन का संकेत दे रहा है। लूट-पाट, चोरी, व्यभिचार, रिस्पतखोरी इत्यादि चारोओर दूषित वातावरण, दंगे, आगजनी को देखकर धर्म की हानि का दृष्य दिखाई दे रहा है। इस प्रकार युग परिवर्तन के संकेत दिखाई दे रहा है।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कहते हैं-**''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।''**

परम् पूज्य गुरूदेव आगे कहते हैं कि यही, वह समय है जब हमें महामानव गढ़ने की पौध लगानी चाहिए। यही ईश्वर की ईच्छा है दूसरे शब्दों में कहें तो इच्छानुसार संतान चाहिए, महामानवों की पौध चाहिए। लेकिन महामानव गढ़ना है तो हमें तप करना होगा, अपनी तुच्छ, संकीर्ण इच्छाओं का त्याग करना होगा। संतान गर्भ में आते ही सीखना प्रारम्भ कर देती है। इसीलिए सनातन संस्कृति में प्रसव के पूर्व गर्भाधान संस्कार का प्रावधान रक्खा है। सनातन संस्कृति का पालन करते हुए महामानव गढ़ना संभव है।

तालिका क्रमांक 05 में क्लोरीन (Cl) क्रियाशील, ऋणात्मक अधातु है, तथा इसके अन्तिम आरबिट मे सात इलैक्ट्रान हैं। इस कारण यह रासायनिक क्रिया के समय दूसरे तत्त्व से एक इलैक्ट्रान शीध्र ग्रहण कर लेता है। इसलिए इसकी संयेजकता एक है। उल्लेखनीय है कि, पदार्थ एवं मनुष्य के शुक्राणु एवं स्त्री के अण्डाणु के मध्य निषेचन क्रिया में साम्य है। यह तथ्य तालिका क्रमांक 05 के विवरण से सिद्ध है।

क्लोरीन के इस लिंकेज को यदि हम ऋणात्मक आयन से धनात्मक आयन में बदल सकें तो इसका आशय यह है कि, प्राकृतिक लिंकेज के अनुसार होनेवाली निशेचन प्रक्रिया में परिवर्तन कर हम होनेवाली संतान यदि लड़की है तो लड़का में बदल सकेगे। और यदि सामान्य प्रक्रिया से होनेवाली संतान यदि लड़का है तो लड़की में परिवर्तित करने का प्रमाण सिद्ध सकते हैं।

हमने जाना कि वैज्ञानिकों ने क्लोरीन जिसकी संयोजकता एक है उसको मुक्त क्लोरीन गैस बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है, इसका फार्मूला (Cl_2) है। इस गैस को बनाने के लिए कई रासायनिक प्रक्रियाओं का पालन करना पड़ा। क्लोरीन गैस का निर्माण दो विधियों के द्वारा किया जाता है:

1. डीकेन विधि (Deacon's Process) और
2. विदयुत अपघटनी विधि (Electrolytic Process)

उक्त विधियों की विस्त्रित प्रक्रिया का वर्णन करना न हमारा उद्देश्य है और न प्रासंगिक है। लेकिन इसे संक्षिप्त में बताना आवश्यक है। इस प्रक्रिया को समझने के बाद इसका अभिप्राय स्वत: स्पष्ट हो जावेगा।

1. डीकेन विधि (Deacon's Process): सिद्धान्त-इस विधि में हाईड्रोक्लोरिक अम्ल गैस का आक्सीकरण कॅापर (i) क्लोराईड की उपस्थिति में वायु या आक्सीजन द्वारा किया जाता है।

$$^{4}HCl + O_2 + (C_{U2}Cl_2) \rightarrow {}^{2}H_2O + {}^{2}Cl_2 + (C_{U2}Cl_2)$$

कॅापर (i) क्यूपरस क्लोराईड

क्यूपरस क्लोराईड वायु की आक्सीजन लेकर क्यूपरास आंक्सी क्लोराईड में परिणित हो जाता है, जो से क्रिया करके कॅापर क्लोराईड बनाता है और क्लोरीन में विघटित हो जाता है। इस क्रिया में थोड़ी क्लोरीन प्राप्त होती है।

$$^{2}Cu_2Cl_2 + O_2 \rightarrow {}^{2}C_{U2}OCl_2$$
$$C_{U2}OCl_2 + {}^{2}HCl \rightarrow {}^{2}Cu_2Cl_2 + H_2O$$
$$^{2}Cu_2Cl_2 \rightarrow C_{U2}Cl_2 + Cl_2$$

2. विदयुत अपघटनी विधि (Electrolytic Process):- सोडियम क्लोराईड के विद्युत विच्छेदन से Cl_2 और H_2 गैसें एवं NaOH प्राप्त होते हैं। वास्तव में यह क्रिया सोडियम हाईड्रोआक्साईड के निर्माण के लिए की जाती है जिसमें H_2 और Cl_2 'उपजात' (Byproduct) के रूपमें मिल जाते हैं। आजकल प्रायः सारी क्लोरीन इसी तरह प्राप्त की जाती है। यह क्रिया कितने ही प्रकार के सेल (Cell) में की जाती है, किन्तु सबके काम करने का सिद्धान्त एक ही है। इनमें नेलसन सेल(Cell), हुकर सेल (Cell) और वोर्स सेल (Cell) प्रमुख हैं:

$$NaCl \rightleftharpoons Na^{+} + Cl^{-}] \times 2$$
$$Na^{+} e \rightarrow Na \text{ परमाणु}] \times 2$$
$$Cl^{-} \rightarrow Cl \text{ परमाणु} + e$$
$$Cl + Cl \rightarrow Cl_2$$
$$2Na + 2H_2O \rightarrow 2NaOH + H_2$$
$$2NaCl + 2H_2O \rightarrow 2NaOH + Cl_2\uparrow + H_2\uparrow$$

विद्युत विच्छेदन के द्वारा ऋण आयन क्लोरीन परमाणु जिसकी संयोजकता एक थी उसको क्लोरीन गैस के अणु में बदलने के लिए कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा। इस प्रयोग से यह सिद्ध होता है कि जिस प्रकार ऋण आयन क्लोरीन के दो परमाणु को जोड़ने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजारकर अणु में बनाया जा सका है, उसी प्रकार पुरूष के शुक्राणुओं और स्त्री के अंडाणु के साथ सामान्य रूपसे होनेवाली निशेचन प्रक्रिया को विभिन्न रसायनों के प्रयोग से बदला जा सकता है। भारतीय सनातन ऋषियों ने विभिन्न प्रकार की शोधों के द्वारा समान्य लिंकेज की प्रक्रिया को बदलने में सफलता पाई है। इन प्रयोगों से अपनी इच्छा के अनुसार विद्वान, बलवान एवं सभी प्रकार के सद्गुणों से संपन्न संतान को प्राप्त करने में सफलता पाई है।

अतः उपरोक्त वैज्ञानिक प्रयोग से शास्त्रों में वर्णित उपरोक्त तालिका क्रमांक 06 में वर्णित प्रयोगों की पुष्टि होती है। विद्वान ऋषियों ने जहाँ एकओर आयुर्वेद पद्यति से 'चरू' (हविष्यान्न) तैयार किया वहीं दूसरी ओर मंत्रों के भी आश्चर्यजनक प्रयोग करके धृष्टद्युम्न जैसे महावीर धनुर्धर को जन्म दिया जो गुरू द्रोणाचार्य को भी पराजित करने में सफल हुआ। उपरोक्त प्रयोगों से आध्यात्मिक रसायन विज्ञान की महत्ता स्वतः सिद्ध होती है।

वर्तमान समय में उपरोक्तानुसार महावीर धनुर्धर को जन्म देने की प्रक्रिया का लोप हो गया हो लेकिन जिन दंपत्तियों के लड़कियाँ ही लड़कियाँ जन्म लेती हों उनको पुत्र को जन्म देनेवाली विद्या वर्तमान समय में भी उपलब्ध है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं वल्कि प्रमाणित सत्य है। इसके अनेक प्रमाण समाज में उपलब्ध हैं।

लेकिन भारत को जगद्गुरू का सम्मान दिलाने के लिए देवात्माओं को जन्म देना होगा। देश को यह सम्मान मात्र कल्पना से नहीं, मात्र शब्दों से नहीं सिद्ध किया जा सकता वल्कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए "आध्यात्मिक रसायन विज्ञान" के मार्ग का अनुसारण करना होगा। इस यज्ञ में जन-जन को जाग्रत होना होगा। इसकी प्रतिभा से प्रत्येक सनातनी सम्पन्न है, ये सभी गुण उसके जीन्स में उपलब्ध हैं, आवश्यकता सिर्फ उन्हें

जाग्रत करने की है। रामचरितमानस में इसका बहुत अच्छा उदाहरण उपलब्ध है। माता सीता की तलास के लिए जाने के लिए सेना खड़ी थी लेकिन समुद्र पारकरने की समस्या थी। सभी विचार कर रहे थे। तभी जांवन्त ने हनुमान को जाग्रत किया।

कहई रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना।।

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि विवेक बिग्यान निधाना।।

ऋक्षराज जाम्बवान् ने श्रीहनुमानजी से कहा-हे हनुमान! हे बलवान्! सुनो, तुमने यह क्या चुप साध रखी है ? तुम पवन के पुत्र हो और बल में पवन के समान हो। तुम बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हो।। 2।।

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।

राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।।

जगत में ऐसा कौन सा कठिन काम है जो हे तात! तुम से न हो सके। श्रीरामजी के कार्य के लिए ही तुम्हारा अवतार हुआ है। यह सुनते ही हनुमान् जी पर्वत के आकार के (अत्यन्त विशालकाय) हो गये।

(संदर्भ रामचरितमानस किष्किन्धाकाण्ड पेज 790)

हनुमान जी की शक्तियाँ जाग्रत हुईं और वे उड़कर समुद्र को लाँधकर लंका पहुँच गये। आज भी सिर्फ जागने की आवश्यकता है, शक्तियाँ तो ईश्वर प्रदत्त हैं। वर्तमान समय में भी माता सीता जी की तरह माता सरस्वती जी को विदेशियों ने हरण करने के प्रयास किये हैं, लेकिन उनका निवास तो हमारे डी.एन.ए. में उपलब्ध है आवश्यकता सिर्फ उसे जाग्रत करने की है। अब वह दिन दूर नहीं, युग परिवर्तन की घंटी बज चुकी है। भारत पुन: विश्वगुरू बनने की दिशा में कदम बढ़ा चुका है। इच्छानुसार संतान प्राप्त करना चाहते हैं तो इच्छाओं के दो पहलू होते हैं-

1. भौतिक दृष्टिकोण एवं

2. आध्यात्मिक दृष्टिकोण

1. भौतिक संसार में भौतिक इच्छायें स्वाभाविक हैं। भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के भी दो पहलू हैं-

1.1 ऐन-केन कमाओ। इस समुदाय में ऐसे लोग आते हैं जो पैसा प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार का साधन अपना सकते हैं जैसे-लूट-पाट, चोरी, डकैती, रिश्वत खोरी, धोका देना, इत्यादि, इत्यादि। लेकिन इस प्रकार के लोगों को आत्मीय सम्मान कभी नहीं मिल पाता एवं समाज में भी वे हेयदृष्टि से देखे जाते हैं। इस प्रकार के लोगों से भय के कारण उनके समक्ष लोग झुकते हों लेकिन आत्मीय सम्मान का तो सवाल ही नहीं पैदा होता है। हाँ स्वार्थी प्रवृत्ति के लोग इनका समर्थ एवं प्रसंसा करते हुए मिल जायेंगे लेकिन स्वार्थ पूर्ति हो जानेपर वे ही उनकी बुराई करते हुए भी मिल जायेंगे। इस वर्ग में प्रायः "Drink & Dance today ours is not tomorrow."की राह का अनुगमन करते हैं। अतः वे अपनी इस इच्छा की पूर्ति करनमें अपने जीवन के लक्ष्य संपन्न एवं सुसंस्कारी संतान प्राप्त करने के लक्ष्य से भटक जाते हैं।

1.2 सिद्धान्तवादी और स्वाभिमान पूर्वक जीनेवाले व्यक्ति इस वर्ग में गिने जाते हैं। कम पैसों में गुजारा कर लेंगे लेकिन इस प्रकार के लोग अनीति को स्वीकार नहीं करेंगे। यद्यपि सभी व्यक्ति चाहते हैं कि, अपनी संतान सुंदर हो, पढ़-लिखकर अच्छी सर्विस करे, बहुत पैसा कमाए इत्यादि, इत्यादि। कौन नहीं चाहता कि उसका बेटा प्रधान मंत्री बने ? कौन नहीं चाहता कि उसका बेटा धन-धान्य से मालामाल हो ? कौन नहीं चाहता कि, उसका बेटा बड़े से बड़ा अधिकारी बने ? लेकिन ऐसा वास्तव में सबके लिए ऐसा फलित कहाँ हो पाता है ? यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए विचारणीय भी है। वह कौन सी बाधा है, जिसके कारण व्यक्ति की इच्छायें धरी की धरीं रह जातीं हैं ? क्या इस उद्देश्य की पूर्ति में सबसे बड़ी बाधा गरीबी है ? लेकिन यदि हम दूरदृष्टि से इस समस्यापर विचार करें तो इसका उत्तर 'न' है।

नहीं भाई इस उत्तर को पढ़कर चौंकिए नहीं। अमेरिका जैसे सम्पन्न देश के **राष्ट्रपति लिंकन** स्ट्रीट लाईट में पढ़ते थे क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, संसार के जिन चार बड़े धनिकों की गणना होती है, उनमें एक का नाम **राकफेलर** है। उनकी माँ एक छोटा मुर्गीखाना चलाती थीं। **वाशिंगटन**: नदी पूरे चढ़ावपर थी। एक स्त्री के दो बच्चे किनारे से खिसक कर बहने लगे। महिला चिल्ला रही थी, पर निकालने में जान जोखिम में डालने को कोई तैयार न था। एक युवक कोट उतारकर धड़ाम से नदी में कूद पड़ा और दोनों बच्चों को पीठपर लादकर किनारे पर ले आया। इस युवक का नाम वाशिंगटन था, जो अपने ऐसे ही गुणों के कारण अमेरिका का राष्ट्रपति बना। **जोम्यो केनाता** उस लड़के का नाम है, जो दस वर्ष की आयु में सड़कपर घूमता, कहीं भोजन का जुगाड़ बैठ जाता, तो वह ठहर जाता। पादरी उसे ले गये और बढ़ईगीरी सीखने की शर्तपर पूरा भोजन देने की व्यवस्था कर सके, साथ ही पढ़ाई भी चल सके। वह व्यक्ति केनिया का राष्ट्रपति बना। दूर की क्यों कहें भारत के वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री **मोदी जी** की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी।

निष्कर्षतः कहने का तात्पर्य है कि गरीबी व्यक्ति की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा नहीं है।

2:-**आध्यात्मिक दृष्टिकोण**-आध्यात्म की दृष्टि से मनुष्य जीवन दुर्लभ है। भारतीय संस्कृति में मानव को यज्ञीय जीवन जीने की आदेश दिया गया है। यज्ञ का अर्थ है सेवा-त्याग। पारमार्थिक जीवन जीना व बाँटकर खाने की शिक्षा, यज्ञ से ऋषियों ने यही सिखाया। भारतीय संस्कृति में यज्ञ को श्रेष्ठ कर्म का प्रतीक बताया गया है। यज्ञ के माध्यम से संतान को इच्छा के अनुसार गढ़ना उसे सुसंस्कारित करना। इस शोध पत्र के अध्याय

क्रमांक 3 में यज्ञ और मंत्रों के द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार संतान को प्राप्त करने का उल्लेख विस्तार पूर्वक किया गया है। भारतीय ऋषियों ने यज्ञीय जीवन पद्यति अपनाते हुए आश्चर्यजनक अनुसंधान किए तथा साहित्य की रचना की है। इन अनुसंधानों से संपूर्ण विश्व को लाभन्वित किया है। विश्व के मूर्धन्य वैज्ञानिकों के कुछ कथन उल्लेख करना प्रासंगिक है, देखें-

अल्वर्ट आइंस्टीनः-हम भारत के बहुत ऋणी है, जिसने हमें गिनती सिखाई, जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज संभव नहीं हो पाती।

मैक्समूलर:-यदि मुझ से कोई पूछे कि किस आकाश के तले मानव मन अपने अनमोल उपहारों समेत पूर्णतया विकसित हुआ है, जहाँ जीवन की जटिल समस्याओं का गहन विश्लेषण हुआ और समाधान भी प्रस्तुत किया गया, जो उसके भी प्रशंसा का पात्र हुआ जिन्होंने प्लेटो एवं कांट का अध्ययन किया, तो मैं भारत का नाम लूंगा। यदि मुझ से कोई पूछे कि कौन सा साहित्य है जिससे हम यूरोपीय लोग (जो आज तक केवल ग्रीक, रोमन और यहूदी विचारों पर पाले पोसे गए हैं) उन उत्तुंग विचारों को प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे आंतरिक जीवन को अधिक परिपूर्ण, अधिक वैश्विक और सही अर्थों में मानवीय बनाने के लिए नितांत आवश्यक है, जो केवल इस जीवन के लिए ही नहीं अपितु देहान्तर और शाश्वत जीवन के लिए भी आवश्यक है, तो मैं पुन: भारत की ओर ही इंगित करूँगा।

मार्क ट्वेनः-भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की माता, पुराणों की दादी एवं परंपरा की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सर्जनशील सामग्री है, उसका भंडार अकेले भारत में है। यह ऐसी भूमि है जिसके दर्शन के लिए सब लालायित रहते हैं। और एकबार उसकी हल्की झलक मिल जाये तो दुनिया के अन्य सारे दृश्यों के बदले में भी वे उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं होंगे।

फ्रांसीसी विद्वान रोमां रोलाः-मानव ने आदिकाल से जो सपने देखने शुरू किए उनके साकार होने का इस धरती पर कोई स्थान है तो वह भारत है।

शोपेनहावरः-विश्वभर में ऐसा कोई अध्ययन नहीं है जो उपनिषदों के समान हितकारी और उदात्त हो। वही मेरे जीवन को शांति देता है और वही मृत्यु में भी शांति देगा।

हेनरी डेविड थोरेः-गीता के बारे में उन्होंने कहा-प्रातःकाल, मैं अपनी बुद्धिमत्ता को अपूर्व और ब्रह्माण्डव्यापी गीता के तत्त्वज्ञान से स्नान कराता हूँ जिसकी तुलना में हमारा आधुनिक विश्व और उसका साहित्य अत्यन्त क्षुद्र एवं तुच्छ जान पड़ता है।

उपरोक्त उदाहरण तो झलक मात्र है। इस प्रकार के अनेक मूर्धन्यों के अनुभव इतिहास में वर्णित हैं।

निष्कर्षतः भारत की सनातन संस्कृति का यह ज्ञान भारत ही नहीं वल्कि विश्व की संतानों को महामानव बनाने में सक्षम है। यह भारत के 'आध्यात्मिक विज्ञान' का चमत्कार है। इसको प्रकाश में लाना इस शोध का लक्ष्य है।

इच्छानुसार संतान प्राप्त करना है तो जन.जन को तप करना होगा। शोध पत्र के अध्याय क्रमां 3 में किए गए वर्णन को जीवन में उतारना होगा। (ऋग्वेद 1/164/40) (वेदों का दिव्य संदेश पेज क्रमांक 350, लेखक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य)।

सारांश (SUMMARY): इच्छानुसार संतान का भावार्थ है, देवात्माओं का अवतरण, ऐसी संतान जिससे व्यक्ति सुखी हो, परिवार सुखी हो, ग्राम सुखी हो, देश सुखी हो और समस्त संसार सुखी हो। भारत ऋषि प्रधान देश रहा है। तप-तपस्या को प्रधानता दी जाती रही है। स्वयं कष्ट वरण करें लेकिन सब के सुख की कामना की गई। लेकिन कालान्तर में भारत को गुलामी का दंश सहना पड़ा है और विशेषरूपसे हिन्दुओं को, परंतु अब दुःख के बादल छट रहे हैं। युग बदल रहा है। रामराज्य के सूर्योदय की लालिमा झलकने लगी है। हमें अपनी सनातन संस्कृति पर गर्व है। सनातन द्वापर, त्रेतायुग के काल खण्ड में भारतीय ऋषियों के द्वारा देवात्माओं को गढ़ने के वैज्ञानिक अनुसंधान किये गए थे तथा आध्यात्मिक मंत्र विद्या भी थी जिसकी एक झलक इस शोध पत्र में आप देखेंगे। लेकिन वर्तमान समय में भी देवात्माओं का अवतरण हो रहा है। अब राष्ट्र के नागरिकों की जिम्मेदारी है कि, देवात्माओं के अवतरण हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करने की तैयारी करें। यह अनुसंधान इस दिशा में नीव का पत्थर सिद्ध हो ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अध्ययन का उद्देश्य

"वसुधैवकुटुंबकम् अर्थात् संपूर्ण विश्व एक, कुटुम्ब है।"

इच्छानुसार संतान का उद्देश्य परिवार सुखी और संपन्न हो। ग्राम सुखी और संपन्न हो। देश सुखी और संपन्न हो। तथा संपूर्ण संसार सुखी और संपन्न हो। इस भावना के साथ इच्छानुसार संतान प्राप्त करने का यह शोध संकल्प किया गया है। परिवार को, देश को और विश्व को सुखी संपन्न बनाने के लिए सुसंस्कारी संतान का होना आवश्यक है। दूसरीओर परिवार में और देश में लड़का और लड़की का अनुपात समान हो तभी परिवार और देश और विश्व सुखी और सम्पन्न बनेगा। अगर लड़का और लड़की का अनुपात समान नहीं होगा तो व्यभिचार, लड़ाई-झगड़े, अशान्ति बढ़ेगी, अत्याचार बढ़ेगा। मर्यादाओं का पालन नहीं होगा। अतः सभी बिन्दुओं पर विचार करके इच्छानुसार संतान प्राप्त करनेवाली शोध करने का निर्णय लिया गया। वर्तमान समय में सुसंस्कारी संतानों की देश ही नहीं वल्कि समस्त संसार को महती आवश्यकता है।

तालिका क्रमांक 01 निष्कर्ष आत्मा नित्य है।

तालिका क्रमांक 02 निष्कर्षतः तत्त्व और आत्मा अविनशी हैं अर्थात तत्त्व और आत्मा में साम्य है।

तालिका क्रमांक 03 निष्कर्षतः आकर्षण का प्रभाव पंच तत्त्वों, धातुओं एवं प्राणियों पर समान रूपसे पड़ता है।

तालिका क्रमांक 04 निष्कर्षतः भौतिक तत्त्व और आत्म तत्त्व में साम्य है।

तालिका क्रमांक 05 निष्कर्षतः उपरोक्त तालिका में वर्णित अभिलेख से स्पष्ट है कि पदार्थ के लिंकेज और मनुष्य में निषेचन (The term fertilization denotes the sexual union of two gametes regardless of their relative structure, behavior and the nature.) के परिणामों में साम्य है।

तालिका क्रमांक 06 उपरोक्त तालिका क्रमांक 06 के बिन्दु क्रमाक 1 से 6 में वर्णित कथाओं का सारांश है कि,धृष्टद्युम्न और द्रौपदी का जन्म यज्ञ कार्य से संपन्न हुआ। द्रोणाचार्य का जन्म द्रोण नामक यज्ञपात्र में शुक्राणुओं को रखकर वैज्ञानिक बिधि से हुआ, परशुराम की उत्पत्ति 'चरू' अर्थात् विशिष्ट बिधि से तैयार औषधियों के प्रयोग से हुआ, इसी प्रकार भगवान श्रीराम, श्री भरतजी, श्री लक्षमणजी और शत्रुध्वन का जन्म 'चरू' के प्रयोग से हुआ और पाण्डवों की उत्पत्ति दुर्वासा ऋषि द्वारा कुन्ती को दिये मंत्रों से विशिष्ट देवताओं के आवाहन से हुआ।

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से 6 में प्रस्तुत तथ्यों से प्रमाणित होता है कि, भारतीय ऋषियों के द्वारा अपनी इच्छा के अनसार संतान प्राप्त करने के लिए सफल प्रयोग किये गये थे। ऋषियों के उपरोक्त प्रयोग वर्तमान वैज्ञानिकों के द्वारा तत्त्वों पर लिंकेज के अनुसंधानों से भी पुष्टि होती है। वैज्ञानिकों ने ऋणात्मक आयन क्लोरीन (Cl^-) के दो परमाणुओं को मिलाकर क्लोरीन गैस (Cl_2) बनाने में सफलता प्राप्त की है, इस प्रयोग से ऋषियों के द्वारा इच्छानुसार संतान प्राप्त करने हेतु विभिन्न औषधियों को मिलाकर यज्ञ पद्यति से हविष्यान्न (चरू) तैयार करने की प्रक्रिया की पुष्टि होती है। इसका विस्तार से उल्लेख तालिका क्रमांक 05 के साथ किया जा चुका है। अतः इसकी पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

उपरोक्त वर्णित ऋषियों के द्वारा तैयार की गईं औषधियाँ काल के गर्त में समाहित हो गईं हों लेकिन अभी इच्छानुसार संतान (लड़का या लड़की) प्राप्त करने के जानकार आज भी उपलब्ध हैं।

वर्तमान समय में उपरोक्तानुसार महावीर धनुर्धर को जन्म देने की प्रक्रिया का लोप हो गया हो लेकिन जिन दंपत्तियों के लड़कियाँ ही लड़कियाँ जन्म लेती हों उनको पुत्र को जन्म देनेवाली विद्या एवं संतान हीन को संतान का जन्म देने की औषधियाँ देनेवाले मूर्धन्य योगी वर्तमान समय में भी उपलब्ध है। यह कोई काल्पनिक बात नहीं वल्कि प्रमाणित सत्य है। इसके अनेक प्रमाण समाज में उपलब्ध हैं। ये मूर्धन्य व्यक्ति यद्यपि साधारण दिखाई देते हैं लेकिन वे संकल्पवान और त्यागी हैं, उन्हें धन का लोभ नहीं है इसलिए उन्हें योगी की संज्ञा से विभूषित किया गया है जिसके लिए वे हकदार हैं। उनके सफल प्रयोग अनुभूत हैं।

भारत के अमृत महोत्सव कालखण्ड में, दिव्य आत्माएँ अवतरित होने के लिए लालायित हैं। क्योंकि यह समय युग परिर्वतन का उपयुक्त अवसर है। इसलिए उन दिव्य आत्माओं को अवतरित होने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना हम सभी की जबाबदारी है। इस कार्य को गति प्रदान करने के लिए विवाह से पूर्व प्रत्येक युवक और युवती को 'आध्यात्मिक रसायन विज्ञान' की जानकारी देने की महती आवश्यकता है। इस विशाल कार्य में गायत्री परिरवार बहुत बड़ा सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यदि कोई भी सहयोग न करे तब भी महाकाल अपना कार्य संपन्न करेगा लेकिन जो व्यक्ति इस कार्य में अग्रणी भूमिका निर्वाह करेगा वह श्रेय का भागीदार बनेगा। इच्छानुसार संतान को एक शब्द में कहना हो तो मैं कहूँगा कि, 'यह महाकाल की इच्छा है।' यह शोध तो एक संदेश मात्र है।

श्रेष्ठ संतान, सुखी परिवार, सुखी देश, सुखी संसार।

वसुधैव कुटुम्बकम्।

ग्रंथ की सूची (Bilibiography):-

1. रामचरितमानस
2. वेदों का दिव्य संदेश लेखक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य।
3. श्रीमद्भगवद्गीता
4. अकार्बनिक रसायन

परिशिष्ट A: प्रश्नावली (Appendix A: Questionnaire):-

1. प्रश्नः- आध्यात्मिक रसायन विज्ञान क्या है ?
   उत्तरः- आत्मा के साथ विकार अथवा सद्गुणों के साथ रासायनिक क्रिया के अध्ययन का नाम आध्यात्मिक रसायन विज्ञान है। उदाहरण -जिस प्रकार तत्त्वों की अम्ल अथवा क्षार से रासायनिक क्रिया होने पर जो यौगिक प्राप्त होते हैं, लेकिन तत्त्व और अन्य अवयव उपलब्ध रहते हैं। इन तत्त्वों को पुनः अलग-अलग किया जा सकता है। उसी प्रकार आत्मा के साथ विकार अथवा गुण जुड़ने के कारण व्यक्ति की प्रवृत्ति में अंतर दिखाई देता है, परंतु ये विकार अथवा गुण उसमें व्याप्त नहीं होते उन्हें पुनः अलग-अलग किया जा सकता है।
2. प्रश्नः-आत्मा का स्वरूप क्या है ?
   उत्तरः-आत्मा नित्य है। आत्मा में कुछ व्याप्त नहीं होता। लेकिन आत्मा के साथ विकार अथवा गुण जुड़ सकते हैं। आत्मा नष्ट नहीं होती सिर्फ प्रकृति बदलती है। उदाहरण- $^{2}H_2 + O_2 = {}^{2}H_2O$ इस समीकरण में हाईड्रोजन और आक्सीजन गैसें मिलने से पानी बनता है। अर्थात् गेसों की प्रकृति बदल गई और पानी की प्रकृति दिखाई देने लगी उसी प्रकार आत्मा के साथ जब लोभ, मोह या अहंकार जैसे विकार जुड़ते हैं तो मनुष्य की प्रकृति क्रमशः लोभी, मोह युक्त या अहंकारी हो जाती है। लेकिन इन दुष्प्रवृत्यिों को निष्कासित करके सद्गुणों को प्रविष्ट किया जा सकता है।
   उदाहरण-जस्ता (Zn) के साथ गंधक के तेजाब (H_2So_4) की क्रिया कराये जाने पर गंधक के तेजाब का सल्फेट जस्ता के साथ मिलकर जिंक सल्फेट बनाता है और हाईड्रोजन मुक्त हो जाती है।
   $Zn + H2So4 = ZnSo4 + H2 \uparrow$
3. प्रश्न-इच्छानुसार संतान को उप शीर्षक क्यों बनाया ?
   उत्तर-इच्छा मनुष्य को प्रदत्त एक महान् शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग करके मनुष्य के प्रारब्ध कर्मों के विकारों को निष्कासित करके सद्गुणों को प्रविष्ट किया जा सकता है। इतिहास में इस प्रकार के अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं जिनमें महा अपराधी को सद्मार्ग पर लाया गया है जैसे कि, अंगुलिमाल और आम्रपाली वेश्या ने भगवान बुद्ध की इच्छा के प्रभाव से सद्मार्ग को अपनाया और अनेको का भला किया। चूँकि यह शोध महामानव गढ़ने के उद्देश्य से की जा रही है इसलिए इच्छा शक्ति का महत्व और अधिक बढ़जाता है।
4. इच्छानुसार संतान का भावार्थ क्या है ?
   इच्छानुसार संतान का भावार्थ है, देवात्माओं के अवतरण हों।
5. इच्छानुसार संतान विषय पर शोध पत्र लिखने की आवश्यकता क्यों हुई ?
   भारतीय ऋषियोंने इच्छानुसार संतान प्राप्त करने के अनेक प्रयोग किये जिनका उल्लेख शास्त्रों में विस्तार पूर्वक मिलता है। इन प्रयोगों के वैज्ञानिक रहस्य जानने तथा समाज को अवगत कराने की दृष्टि से यह शोध करने की महती आवश्यकता प्रतीत हुई। ईश्वर की कृपा से तत्त्वों के लिंकेज और प्राणियों के लिंकेज में साम्य होने का रहस्य उजागर हुआ। तथा ऋण आयन के परमाणुओं के मिलाने के प्रयोग से ऋषियों के द्वारा आयुर्वेदिक हविष्यान्न "चरू" को तैयार करने के प्रयोग की पुष्टि होती है। वर्तमान समय में भी इस प्रकार के प्रयोग की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। और अधिक जानकारी के लिए इस शोध पत्र को अवश्य पढ़ें।
6. इच्छानुसार संतान शोध का उद्देश्य क्या है ?
   इच्छानुसार संतान का उद्देश्य परिवार सुखी और संपन्न हो। ग्राम सुखी और संपन्न हो। देश सुखी और संपन्न हो। तथा संपूर्ण संसार सुखी और संपन्न हो। इस भावना के साथ इच्छानुसार संतान प्राप्त करने का यह शोध संकल्प किया गया है। परिवार को, देश को और विश्व को सुखी संपन्न बनाने के लिए सुसंस्कारी संतान का होना आवश्यक है। दूसरीओर परिवार में और देश में लड़का और लड़की का अनुपात समान हो तभी परिवार और देश और विश्व सुखी और सम्पन्न बनेगा। अगर लड़का और लड़की का अनुपात समान नहीं होगा तो व्यभिचार, लड़ाई-झगड़े, अशान्ति बढ़ेगी, अत्याचार बढ़ेगा। मर्यादाओं का पालन नहीं होगा। अतः सभी बिन्दुओं पर विचार करके इच्छानुसार संतान प्राप्त करनेवाली शोध करने का निर्णय लिया गया। वर्तमान समय में सुसंस्कारी संतानों की देश ही नहीं वल्कि समस्त संसार को महती आवश्यकता है।
7. इच्छानुसार संतान शोध पत्र से आम आदमी को क्या फायदा होगा ?
   परिवार के सुखी जीवन के लिए तथा समाज की सुख.शान्ति के लिए परिवार में पुत्र एवं पुत्री दोनों का होना आवश्यक है, लेकिन देखने में आता है कि किसी दंपत्ति के लड़कियाँ ही लड़कियाँ है तो वे लड़के के बिना दुखी हैं। दूसरीओर कुछ दंपत्ति ऐसे हैं जिनके लड़का तो है परंतु वे एक कन्या पाने के लिए दु:खी है। तथा कुछ दंपत्ति ऐसे हैं जो संतान पाने के लिए तरस रहे है। इस प्रकार के दंपत्ति वैज्ञानिक विधियों एवं चिरपुरातन तकनीकि से भी विश्वासपूर्वक लाभ ले सकते हैं। यह शोध आम व्यक्ति को मात्र वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करती है परन्तु किसी को वैसा करने के लिए बाध्य नहीं करती। प्रत्येक व्यक्ति अपने बुद्धि विवेक से निणर्य लेने के लिए स्वतंत्र है।

परिशिष्ट B: किसकी सम्मति/ स्वीकृति/ अनुमति (Appendix B: Consent from):-

स्वयं की अंतरात्मा की आवाज का अनुकरण करके उक्त अनुसंधान प्रस्तुत किया है।

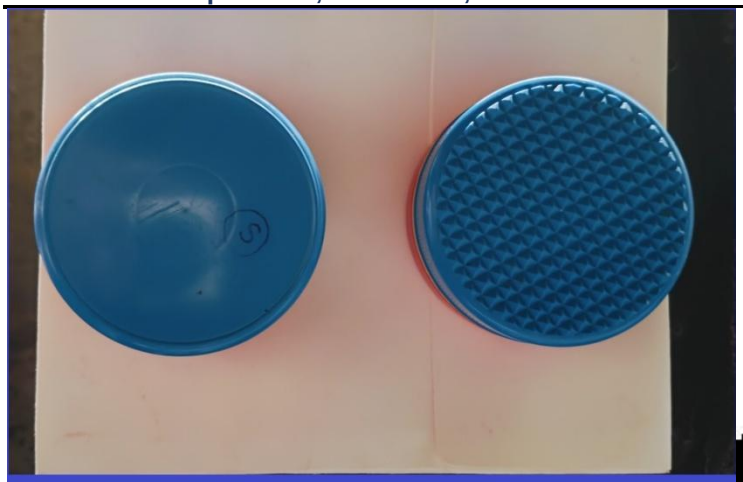
परिशिष्ट C: आँकड़ों से संबन्धित चित्र (Appendix C: Data Figures):- चित्रों की कुल संख्या (14)

1-

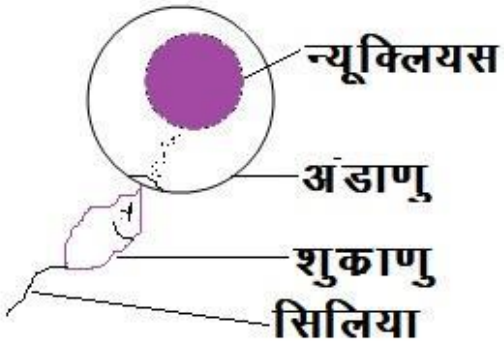
2.



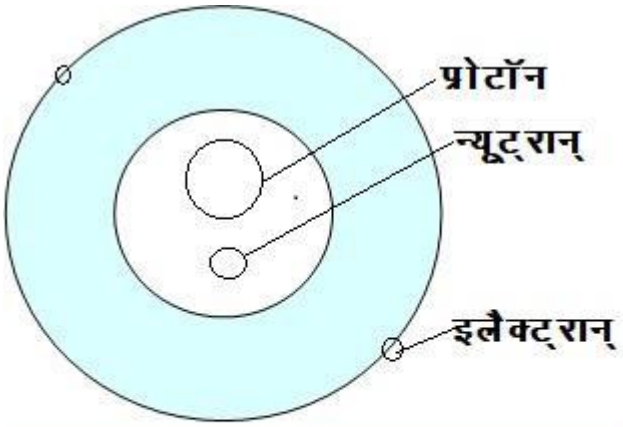




दोनों चुंबक दक्षिणी ध्रुव दूर . दूर हैं विकर्षण के प्रतीक



शुकाणु और अण्डाणु के आकर्षण से सिलिया के द्वारा अण्डाणु की ओर गमन कर रहा है।



परमाणु संरचना में इलैक्ट्रॉन का प्रोटॉन के आकर्षण से परिधि में परिक्रमा करना।



पक्षियों का अपनी संतान के प्रति आकर्षण



खरगोश का अपनी संतान से आकर्षण



लड़का और लड़की में आकर्षण



पुरूष और स्त्री के बीच आकर्षण

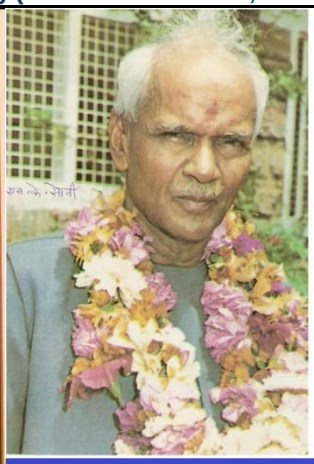


श्री राम और लक्ष्मण जी राजा दशरथ जी की इच्छानुसार श्रंगी ऋषि द्वारा यज्ञ तकनीकि से प्राप्त चरू से प्रकट हुए थे।



योद्धा संन्यासी स्वामी विवेकानंद (1863-1902)

वर्तमान युग के दिव्य युगपुरूष स्वामी विवेकानन्द।



युग पुरूष वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य गायत्री परिवार के स्थापक।